

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -14

अंक -5 जून -1, 2013



(पाक्षिक)

माउण्ट आबू

मूल्य 7.50 रु.

सोच से परस्थिति को बड़ा न बनाए-शिवानी



नवी मुंबई-वासी। ब.कु. तारा, ब.कु. शोला, ब.कु. शिवानी, सोने कलाकार सुरेश ओबराय, ब.कु. गंगाधर, प्रेम कुमार, युवा मेयर सागर नाईक तथा कार्यक्रम में शरीक शहर गणमान्य लोग।

नवी मुंबई-वासी अनलोकिक ट्रेजर ऑफ लाईफ कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए। भारत के सबसे कम उम्र के युवा मेयर सागर नाईक ने कहा कि व्यक्ति में अनेक प्रतिभाएं छिपी हुई हैं सिर्फ उसे कार्य में लगाना है। उन्होंने कहा कि व्यक्ति सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में ब्रह्माकुमारी संस्थान के कार्य बहुत ही सराहनीय हैं। संस्थान द्वारा आयोजित आध्यात्मिक

कार्यक्रम से यहां के नागरिकों को लाभ होगा। प्रेम कुमार अध्यक्ष, रोटरी क्लब, ने कहा कि जीवन की यात्रा सुख व शान्तिमाय रहे उससे लिए आध्यात्मिकता को जीवन में अपनाना बहुत आवश्यक है। उन्होंने इस कार्यक्रम का लाभ सभी को मिले ऐसी शुभकामनाएं दी।

मोटीवेशनल ट्रेनर ब्रह्माकुमारी

शिवानी ने रोजमर्रा जींदगी में जुड़ी छोटी-छोटी परिस्थितियां व कठिनाईओं के मध्य अपनी खुशी को बरकरार रखने में नुक्से बताए। उन्होंने कहा कि आज मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या है समय नहीं है, यह कहते नजर आता है। लेकिन वास्तव में समय का उपयोग कैसे किया जाए, उसके बारे में थोड़ा सोचने की जरूरत है। व्यवहारिक जीवन में परिस्थितियों का आना स्वभाविक है।

किन्तु परिस्थितियां हमारी स्थिति को प्रभावित न करे उनके बारे में बहुत ही सटीक व जीवंत उदाहरण के माध्यम से बताया।

उन्होंने एक सारगर्भित व रहस्य बताते हुए कहा कि- 'मन हमारी बहुत सुंदर शक्ति है। उसे विधिपूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता है। सबकी चाह है मन खुश रहें। परंतु उसके लिए थोड़ा सा प्रयास व अभ्यास की जरूरत है।

परिस्थिति पर ई है। स्वस्थिति अपनी है। खुशी मेरी अपनी अमानत है। उसे संभालकर रखना होगा।

उन्होंने आगे कहा कि दिन का आरम्भ सकारात्मक विचारों के साथ करना चाहिए। अपने आपसे वादा करना चाहिए की किसी भी हालत में मेरी खुशी को कम नहीं होने देना है। आपसी सम्बन्धों में मजबूती के लिए सामने वाले व्यक्ति को माफ कर देने की सीख दी।

- शेष पेज 4 पर..

मूल्य शिक्षा तालिम शिविर का आयोजन

सुरत-वराछा। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की लंबे हनुमान रोड स्थित शाखा द्वारा सुरत की 118 स्कूलों से करीब एक हजार टीचर्स के लिए मूल्य शिक्षा तालिम शिविर का आयोजन का सफल आयोजन के. रोड स्थित सरदार पटेल स्मृति भवन में किया गया।

ईश्वरीय स्मृति के साथ प्रारंभ की गई इस तालिम शिविर का उद्घाटन गुजरात राज्य के नॉन-ग्रांटेड स्कूल संकुल के चेयरमैन तपस्वीभाई दवे, जगदीश भाई चावडा, प्रो. स्वामीनाथनभाई, ब्रह्माकुमारी वराछा केन्द्र के संचालिका बी.के. तृप्ति बहन एंथम लायन्स क्लब के पास्ट प्रेसिडेंट रमणभाई दीप प्रज्जवलन कर किया गया। उपस्थित शिक्षकगण की विशाल सभा का अभिवादन करते हुए बी.के.

तृप्तिबहन ने बताया कि गुरुजनों का स्थान समाज में सदा के लिए सम्मान व आदर का रहा है। सभी के लिए जिनका

जीवन आदर्श है वही समाज में आदर व सम्मान के पात्र है। उन्होंने कहा कि आज आध्यात्मिक मूल्यों का बच्चों में होना

बहुत जरूरी है। ज्ञान योग विद्या संकुल के चेयरमैन जगदीश चावला ने अपने विचार व्यक्त करते कहा की

ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा समय प्रति समय शिक्षा जगत के लिये हो रही सकारात्मक प्रवृत्तियां अती सराहनीय है। हम सभी शिक्षा क्षेत्र के सहकर्मियों के लिए इस तरह मोटीवेशन प्रोग्राम स्वयं को चार्ज करने लिए है। उन्होंने संस्था की निःस्वार्थ सेवाओं के अंतःकरण से प्रशंसा की।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में मुंबई के प्रो. ई.वी. स्वामीनाथन ने अपने वक्तव्य में बताया कि विद्यार्थियों के साथ व्यावहारिक रूप से जितना मूल्य निष्ठ बनेगे उतनी ही समाज में मानवता महेकेगी, एक बाग की कीमत उसके विस्तार से नहीं लेकिन उसमें खिले हुए सुगंधित पुष्पों से होती है और भविष्य के सच्चे फुल वह वर्तमान में हमारे सामने उपस्थित विद्यार्थी है। उनमें दिव्यता की महेक व गुणों के फूलों से श्रींगार करना

- शेष पेज 4 पर..



सुरत-वराछा। सरदार पटेल स्मृति भवन में प्रो. ई.वी. स्वामीनाथन हजारों शिक्षक गण को संबोधित करते हुए।

स्वयं की साधना

आत्मानुभूति के आनंद में स्थित होना। साधना के पथ में स्वानुभूति का आनंद लेना वह एक साधना पथ का मुख्य अंग है। अपने आप में खो जाना। यानी स्वयं जो है जैसा है उस अस्तित्व को पहचानना यह जीवन यात्रा की बड़ी उपलब्धि है, उसके लिए एकांत व एकाकीपन में समय को बिताना, अपनी स्वानुभूति के परस्ती का आनंद का लुप्त उठाना यही जीवन यात्रा में बेटरी चार्ज करने के बराबर है।

कोई भी साधक बिना एकांत अपने लक्ष्य अर्जित नहीं कर सकता। एकांत में बैठे एकाकीपन का अनुभव फुल के समान है। साधक के हृदय के अंदर में विकसित हुआ एक कमल है। या यू कहें कि एकाकीपन विधायक है, एकाकीपन स्वास्थ्य है - अपनी निजता में जीने का आनंद, स्वयं अपने अंतर्आकाश में जीने का आनंद।

योग का अर्थ ही है - अकेले होने का आनंद। तुम सच में जीवन होते हो जब तुम योग में सक्षम हो जाते हो, जब कभी दूसरे पर, किसी परिस्थिति पर, किसी अवस्था पर कोई निर्भरता नहीं रहती और चूंकि यह तुम्हारी अपनी स्थिति होती है, यह सदैव बनी रहती है - सुबह शाम, दिन में रात में, जवानी में या बूढ़ापे में, स्वास्थ्य में या बीमारी में। जीवन में और मृत्यु में भी यह मौजूद होता है क्योंकि यह ऐसी चीज नहीं है जो तुम्हें बाहर से घटती हो। इसका तुम्हारे भीतर से प्रादुर्भाव होता है। यह तुम्हारा अपना स्वभाव है, स्वरूप है।

अंतर्यात्रा परम एकाकीपन की एक और यात्रा है। तुम अपने साथ वहां किसी को नहीं ले जा सकते। तुम अपने केंद्र में किसी को भागीदार नहीं बना सकते - अपने प्रिय जनों को भी नहीं ले जा सकते। चीजों का ऐसा स्वभाव ही नहीं है। इस बारे में कुछ भी नहीं किया जा सकता। जिस क्षण तुम भीतर जाते हो, बाहर के सारे संबंध टूट जाते हैं, सब सेटूट जाते हैं। वास्तव में, सारा जगत विलीन हो जाता है।

इसी कारण से रहस्यदर्शियों ने इस जगत को 'माया' कहा है। ऐसा नहीं कि संसार नहीं है। लेकिन योगी के लिए, जो भीतर जाता है उसके लिए यह जगत करीब-करीब मिट जाता है। उसका मौन इतना गहन हो जाता है कि कोई शोरगुल उसे बेधता नहीं। एकाकीपन इतना गहरा होता है कि तुम्हें बड़े साहस की जरूरत पड़ती है। पर इसी एकाकीपन से आनंद का उदय होता है। इसी एकाकीपन में परमात्मा का अनुभूति होती है। दूसरा कोई मार्ग नहीं है।

एकाकीपन का उत्सव मनाओ, अपने विशुद्ध अंतर्आकाश का उत्सव मनाओ और तुम्हारे हृदय में एक सुमधुर जीत फूटेगा। और यह जागरूकता की जीत होगी। दूर से आता हुआ मधुर ध्वनि का गीत होगा - किसी व्यक्ति - विशेष के लिए नहीं, पर गीत बस चल रहा है। क्योंकि हृदय भरा है और गाना चाहता है क्योंकि मेघ भरा है और गाना चाहता है, क्योंकि मेघ भरा है और वरसना चाहता है, क्योंकि फूल विकसित हो गया है और पंखुडिया खुल गई है और सुवास फैलता है - बिना किसी को सम्बोधित किए। इस तरह अपने एकाकीपन को सुंदर नृत्य बना दो

योग कुछ और नहीं बस एक उपाय है तुम्हें अपने सच्चे स्वरूप प्रति सजग करने का - वह तुम्हारा निर्माण नहीं है, तुम वह होते ही हो। उसके साथ ही तुम जन्मे हो। तुम वही हो। बस इसका आविष्कार करना है। यदि यह संभव नहीं है या समाज ऐसे होने नहीं देता - और कोई समाज इसे होने की सुविधा नहीं देता। क्योंकि प्रमाणिक निजता खतरनाक है, खतरनाक है मान्यताओं के लिए, खतरनाक है सरकार के लिए, खतरनाक है भीड़ के लिए, खतरनाक है परंपरा के लिए, क्योंकि एक बार मनुष्य अपने सच्चे स्वरूप को जान ले, फिर वह एक व्यक्ति बन जाता है, वह फिर भीड़ के मनोविज्ञान का हिस्सा नहीं रह जाता, वह फिर अंध (संघर्ष चर्च 4 पर)



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

नहीं मिलता - तो क्या वह कर्मातीत अवस्था तक पहुँच सकेगे ?

दादी जी - मेरा अनुभव कहता है कि जिन कर्मबन्धनों से हम फंसे हैं, उन सबसे फ्री होने के लिए इतने ही श्रेष्ठ कर्म चाहिए। सिर्फ योग ही काम नहीं करता। योग भी तब लगेगा जब श्रेष्ठ कर्म होंगे। योग से हमारे पास्ट कर्मों का हिसाब-किताब भी चुकतू तब होता है जब अभी श्रेष्ठ कर्म साथ-साथ हैं। योग से बुद्धि अशुद्ध से शुद्ध बनती है। वह शुद्ध सोचना सीखती है। आप निगेटीव छोड़ दो, साधारण व व्यर्थ संकल्प छोड़ दो, शुद्ध सकारात्मक संकल्प करो... इसके लिए टाइम की जरूरत नहीं है। कर्म करते भी मेरी बुद्धि शुद्ध है, परमात्मा बाप से जुटी हुई है तो मैं योगी हूँ। अगर मेरी बुद्धि शुद्ध नहीं है, किसी बात का असर है, कोई सोच विचार वा चिन्तन है तो मैं योगी नहीं। इसलिए योग में श्रेष्ठ कर्म हमें बहुत मदद करते हैं। कई बार १८ घण्टे सेवा करते भी यह फील नहीं होता कि सेवा के कारण मुझे आराम ही नहीं मिलता। सेवा तो मुझे दुआएं देती है। सेवा अगर मेरे जीवन में न होती तो हम जिन्दा ही नहीं होते। जिन्दा होते भी तो किस काम के। दूसरों को हमारे द्वारा बल मिले, शान्ति मिले। अगर मुझे आत्मा से अनेकों को सहयोग मिला तो वह सहयोग ही सिद्ध करता है कि हम योगी हैं। हम योग लगाते हैं बाबा से सहयोग लेने के लिए। योगी ही सबका सहयोगी बनता है। सेवा माना सहयोगी बनना, हर बात में हाथ बढ़ाना। बुद्धि की मदद करना, दिल से शुद्ध वायब्रेशन की स्नेह भरी मदद करना। यह योग

मन रूपी घोड़े को अच्छा खाना व मालिस ठीक से करो

प्रश्न- यदि कोई सेवा में बहुत बिजी है, योग के लिए समय

सहयोग एक होता जा रहा है। इतनी यज्ञ सेवा सबके सहयोग से हो रही है, किसमें कोई विशेषता है, किसमें कोई ईश्वरीय परिवार का स्नेह और सहयोग भी हमको योगयुक्त बनाता है। तो हम कर्म और योग को अलग नहीं कर सकते। यज्ञ सेवा करना भी किसके भाग्य में हो। संगठन में रहना भी किसके भाग्य में हो। कभी अपनी जीवन साधारण नहीं समझो। बाबा ने मुझे भाग्य दिया है कर्म करने का। इससे बड़ा योग और क्या है। यह मेरे योग की शुद्ध संकल्प की कमाल है। दिल सच्ची है तो आत्मा को जिस घड़ी जिस सेवा की जरूरत है वह बाबा करा लेता है। सिर्फ हमें ही-जी करना है। हम कभी यह कह नहीं सकते कि हमें योग लगाने का टाइम नहीं मिलता जो सेवा मिलती है मैं उसमें खुश हूँ, बाबा का मेरे पर अधिकार है। मेरी परसंनल उन्नति - मेरे सच्चाई से, सम्बन्ध से, बुद्धि कहां लौक न हो, गम्भीरता, सयानप मेरे पास हो, ईमानदारी मेरे पास हो, इसी से होगी। मैं सेवा छोड़कर योग में बैठ जाऊँ, नहीं। मेरा दिल खाता है। जिस सेवा अर्थ आई हूँ, वह मुझे बजानी है। जिस घड़ी जो काम है वह ईमानदारी व सच्चाई से करना भी योग है। तो हर बात में सच्चा सहयोगी बनने वाला ही अपना सुंदर रिकार्ड बाबा के पास रखता है। बस बाबा मुझे और कुछ नहीं चाहिए, आपका सहयोग हो और जितना मुझ आत्मा से हो सकता है, श्रेष्ठ कर्म करता चलो - इससे कर्मातीत अवस्था बनी पड़ी है। कर्मातीत बनने वालों की भी लाइन लग जायेगी।

प्रश्न- पाप कर्म क्या है ?

दादी जी - पाप वह है जहां कान्सेस खाता है। विवेक खाता है - वह नहीं करना चाहिए। पुण्य वह है जिसमें अपना कान्सेस माने कि यह काम ठीक हुआ। मन उल्टा सीधा दोनों करता है। बुद्धि जानती है यह उल्टी बात है या सीधी बात है, तो

भी संगदोष या पुराने संस्कारवश उल्टा कर लेती है। पीछे विवेक खाता है। विवेक किसी को भी छोड़ता नहीं है। बुद्धि प्रभाव में आई, संस्कारों के वश हुई, विवेक नहीं छोड़ता। जब एकांत में होगा, शान्त होगा तो विवेक अंदर मारता है। किसी ने बुरा नहीं किया होगा तो सीधा कहेगा मैंने नहीं किया, मेरा विवेक नहीं कहता। तो जिसमें अपना विवेक खाता है वह काम हमें नहीं करना है। जिस काम के लिए दिल मानती है वह करते चलो।

प्रश्न- दादी मनपर लगाम कैसे लगाय आशरीरी, विदेही, निराकारी बनने की मन में लगन है तो जो बाबा के बोल सुनें, वह हमारे जीवन में हों। अन्दर से रिहर्सल (अभ्यास) करें अशरीरी स्थिति, फिर विदेही स्थिति पहले में अशरीरी आत्मा हूँ, फिर विदेही फिर निराकारी, फिर अव्यक्त फ्रिश्ता फिर अकारी अगर इसी तरह से हमने अपने आपको इन स्थितियों में रखा तो मन मौज में आ जायेगा। मन खुश हो जायेगा। इसलिए भटक रहा था बेचारा मन, इसलिए अशांत हो रहा था, क्योंकि उसको जो खुराक चाहिए गी वह नहीं मिली थी और देह, सम्बन्ध, दुनिया में फंस गया। अभी उसको छुड़ाया। मन को खुशी की अच्छी खुराक खिलाओ तो खुश होता है। कहते हैं मन घोड़ा है और जो घोड़े को सम्भालने वाले होते हैं उनको अक्ल होता है कि घोड़े को कैसे सम्भाला जाता है। घोड़े को खाना ठीक खिलाओ, मालिस अच्छी तरह से करो तो वह खड़ा हो जाता है, उसको नशा है कि कौन मेरा मालिक है। अगर उसको ठीक खाना नहीं खिलाते हैं, पूरी सम्भाल नहीं करते हैं तो परेशान करता है। तो कईयों का मन परेशान करता है। तो कईयों का मन परेशान होता है क्योंकि प्यार से बैठकर उसकी मालिस नहीं की है।



दादी इंदुकोइनिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

एक बार किसी ने बाबा को कहा कि बाबा ! मैं आपको बहुत याद करता हूँ लेकिन आप रेस्पान्ड नहीं देते, आपसे बहुत बातें करता हूँ लेकिन मैं ही करता हूँ, आपका जवाब नहीं आता है। तो बाबा ने कहा, आप पहले आत्मा समझकर मेरे से बात करते हो या देह भान में बाबा को याद करते हो ? तो उसने कहा, उस समय होता तो देहभान ही है। जो समस्या है वह याद रहती है, उसी स्मृति में रहता हूँ। तो बाबा ने कहा, इसलिए मेरा रेस्पान्ड कैच नहीं कर सकते हो।

हम बाबा को सतगुरु कहते हैं, भक्ति में भी गुरु किसलिए करते हैं ? समझते हैं गुरु ही पार ले जायेगा। तो शिवबाबा तो पार ले ही जाने वाला है, क्योंकि उसी को ही पतित-पावन कहा जाता है। उसी को सदायत दाता, मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता कहा जाता है। तो वह हमारा सद्गुरु भी है, जब हम उसकी मत पर चलते हैं तो आशीर्वाद

परमात्मा में मन लगाने के लिए इस देह को भूलना होगा

स्वतः मिलती है। हम समझते हैं बाबा हमारे ऊपर थोड़ी कृपा कर दो ना, आप दयालु हो ना, थोड़ी दया कर दो। तो बाबा कहते हैं दया करने के लिए तो मैं तैयार हूँ और तुम अधिकारी हो। तुम्हारा हक है बाप के ऊपर, क्यों नहीं करेगा, बच्चे के ऊपर नहीं करेगा तो क्या कोई भगत के ऊपर करेगा ! लेकिन इतना अधिकार है, इतना नशा है, इतना फखुर रहता है कि परमात्मा की संतान हूँ ? या काम करते एक्शन कान्शियस हो जाते हैं। जो काम कर रहे हैं उसी के ही कान्शियस बस, खाना बना रहे हैं या कोई भी काम कर रहे हैं, दफ्तर का कर रहे हैं, घर का कर रहे हैं, जो काम किया उसी के ही संकल्प चल रहे हैं। उसमें शिवबाबा की याद नहीं रहती। फिर कहते भगवान की याद में मन ही नहीं लगता। तो जरूर कोई गलती है। देखो मंदिर में भी जाओ तो कहते हैं वहां चमड़ा नहीं ले जा सकते। जबकि जड़ चित्र हैं वहां कहते हैं चमड़े का सामान नहीं ले जाओ। तो यहाँ भी परमात्मा से मिलने के लिए वा उससे मन लगाने के लिए इस चमड़ी अर्थात् देह को भूलना होगा। इस चमड़ी का भान छोड़ना पड़ेगा। जैसे जूता

और चमड़े का सामान छोड़कर मंदिर के अंदर जाते हैं वैसे इस देह-भान को छोड़ने बिगार मिलन नहीं हो सकता।

अष्टावक्र की कहानी भी सुनाते हैं कि जब राजा ने एलान किया मुझे सेकण्ड में कोई जीवनमुक्ति दे। तो बहुत विद्वान और बड़े-बड़े लोग आये, लास्ट में अष्टावक्र आया थे अष्टावक्र को देखकर सभा में जो लोग बैठे थे वह हँसने लगे कि यह आठ कुख वाला आया है जीवनमुक्ति देने। तो अष्टावक्र ने उस समय यही कहा कि यह जो सभा है यह सारी चमारों की सभा है। सब सोचने लगे हम इतने बड़े विद्वान, आचार्य, यह सबको चमार कह रहा है। तो अष्टावक्र ने बताया कि मैं चमार क्यों कहता हूँ ? क्योंकि तुम चमड़ी को ही देख रहे हो, आत्मा को तो देखा ही नहीं। चमड़ी को ही देखा इसलिए चमारों की सभा हुई ना ! तो पहले यह देह (चमड़ी) जो है, इसके भान को भूलना पड़े, तब आत्मा का सम्बन्ध आप सेकण्ड में अनुभव कर सकते हो।

तपस्या-जो राज्य दिलाये

संसार में असहायों पर अत्याचार, निर्धनता व रोगों में वृद्धि तथा पाप और भ्रष्टाचार का बोल- बाला देखकर उसके मन में तीव्र तरंगें उतपन्न होने लगीं कि हम ईश्वरीय मत पर ऐसा राज्य स्थापित करें, जहां कोई भी किसी को सताये नहीं, किसी के साथ अन्याय न हो, सुख-चैन की बंशी सदा बजे, किसी की भी अकालमृत्यु न हो, सबके भण्डारे धन-धान्य से भरे हों, प्रकृति कोई भी उपद्रव न करे, रोग-शोक का नाम-निशान न हो, सभी निर्भिकतापूर्वक यत्र-तत्र-सर्वत्र विचरण करें और राजा सतय-स्वरूप में माता-पिता हो।

क्या कोई मनुष्य ऐसा साम्राज्य स्थापित कर सकता है? कदापि नहीं। मनुष्य देश को स्वतंत्र करा सकता है, कानून बना सकता है, उद्योग लगा सकता है परन्तु ऐसा राज्य स्थापित नहीं कर सकता जिसमें सम्पूर्ण विश्व एक परिवार हो, मानव-मानव में परस्पर अपनापन हो और किसी-को-किसी से भय न हो। यह कार्य केवल ईश्वरीय शक्ति का ही है।

स्वयं ईश्वर राजयोग सिखाकर अपनी समस्त शक्तियां मनुष्यात्माओं को प्रदान कर देता है। वह उनमें पवित्रता का प्राण फूंक देता है। इनके बल से सम्पूर्ण प्रकृति व सम्पूर्ण मनुष्यात्माएं पावन बन जाती हैं। पापी और भ्रष्टाचारी रहते ही नहीं। दुरात्माएं वापिस चली जाती हैं, देवात्माएं सृष्टि पर उपस्थित हो जाती हैं, प्रकृति सेवारत हो जाती है। योगबल के कारण काया सम्पूर्ण निरोगी बन जाती है और इस विश्व को स्वर्ग की संज्ञा प्राप्त हो जाती है। अब स्वयं सर्वशक्तिवान भगवान पुनः इस धरा पर स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। इतना ही नहीं, स्वर्ग बनाकर 2500 वर्ष तक उसकी बागडोर जिनको देनी है, वे उन्हें भी तैयार कर रहे हैं। इसके लिए परमशिक्षक परमात्मा ने राजयोग की गहन तपस्या सिखाई है, जिसके द्वारा एक मनुष्य अपने स्तर को इतना ऊँचा उठा सकता है, वह स्वयं को इतना शक्तिशाली व महान बना सकता है कि स्वर्ग का राज्य उसके हाथ में दिया जा सके।

यह राजयोग आत्मा और परमात्मा का मिलन है अथवा यों कहें कि राजयोग द्वारा आत्मा, परमात्मा पिता के साथ रहते-रहते उनकी सम्पूर्ण शक्तियां, पवित्रता और गुण स्वयं में धारण कर लेती है। इस तपस्या में तपस्वी पर ज्ञान सूर्य परमात्मा की किरणें निरन्तर पड़ती रहती हैं। तपस्वी की बुद्धि ज्ञान सूर्य पर एकटिक स्थिर हो जाती है, उसे यह संसार और यहां के मनुष्य दृष्टिगोचर ही नहीं होते। उसका दिव्य नेत्र निरन्तर उस एक को ही निहारता रहता है। इसी एकाग्रता और शिव परमात्मा से समीप सम्बन्ध होने के कारण वह योगी बन जाता है।

इस तरह ईश्वरीय शक्तियों को स्वयं में समाकर जब आत्मा मास्टर सर्वशक्तिवान बन जाती है तब सर्वशक्तिवान भगवान स्वर्ग की बागडोर उन्हें देकर अपने धाम वापस चला

जाता है। परन्तु इन शक्तियों को वही स्वयं में समा सकता है जिसका अन्तर्चिन्तित पूर्णतया स्वच्छ हो, जिसने पवित्रता के द्वारा स्वयं की बुद्धि को सुयोग्य-पात्र बनाया हो।

राज्य-पद पाने के लिए सर्व शक्तियां, श्रेष्ठ चरित्र, सर्व गुण, पालना के संस्कार, देने की वृत्ति और सबके प्रति अपनापन होना परमावश्यक है। इन सभी की प्राप्ति ज्ञान-चिन्तन से, सेवोओं में दुआएं प्राप्त करने से, मै-पन व स्वार्थ-भाव के त्याग से, सर्व के प्रति आत्मिक भान जाग्रत करने से व योग-साधना से होती है। प्रस्तुत लेख में एक राजा के अन्दर क्या गुण होने चाहिए-इस विषय पर से सम्बन्धित व्याख्या हम करेंगे। स्मरण रहे, अकेले योग अभ्यास से सर्वस्व प्राप्त नहीं होगा।

सेवाओं द्वारा हमें सर्व को सुख भी देना है। सेवा के मैदान पर रहकर स्वयं को समझदार

को किसी-न-किसी रूप में प्राप्त होगा, वे सर्व के सहयोगी होंगे। प्रकृति भी उन्हें अपना मालिक स्वीकार करेगी। राजा, दाता होता है, इसलिए उसे अन्नदाता भी कहते हैं। सफल राजा वे हुए जिन्होंने अपना सर्वस्व प्रजा को सुखी करने में लगा दिया, भले ही इसके लिए उन्हें स्वयं भी कष्ट सहना पड़ा हो। परन्तु जो राजा प्रजाके धन को अपने भोग-विलास में गंवा देता है, अन्ततः उसे राजाई से हाथ धोना पड़ता है।

योग-तपस्या में हमने सीखा है कि प्राप्त धन को व साधनों को दूसरों की सेवा में लगाओ। जो उसे अपने प्रति ही प्रयोग करते हैं, उनकी ईश्वरीय शक्तियां नष्ट हो जाती हैं, उनमें त्याग का सौन्दर्य नहीं रह पाता और धन व साधन भी सुखदाई नहीं रहते। राजा, प्रजा-पालक होता है। अपने इस कर्त्तव्य को भूलकर यदि कोई राजा भोग-विलास में मग्न हो जाए तो प्रजा उसे कभी प्यार नहीं करती और उसके अन्त का इन्तजार करती है। सच्ची शान वाले राजा अपनी नींद छोड़कर, वेश बदलकर, यह देखने के लिए कि कहीं कोई दुःखी तो नहीं, चोरी तो नहीं होती सुरक्षाकर्मी सतकर्ता से काम कर रहे हैं, नगर में विचरण किया करते हैं। नगर में विचरण किया करते हैं। आज सब कुछ इसके विपरीत है।

यह राजयोग आत्मा और परमात्मा का मिलन है अथवा यों कहें कि राजयोग द्वारा आत्मा, परमात्मा पिता के साथ रहते-रहते उनकी सम्पूर्ण शक्तियां, पवित्रता और गुण स्वयं में धारण कर लेती है। इस तपस्या में तपस्वी पर ज्ञान सूर्य परमात्मा की किरणें निरन्तर पड़ती रहती हैं। तपस्वी की बुद्धि ज्ञान सूर्य पर एकटिक स्थिर हो जाती है, उसे यह संसार और यहां के मनुष्य दृष्टिगोचर ही नहीं होते। उसका दिव्य नेत्र निरन्तर उस एक को ही निहारता रहता है। इसी एकाग्रता और शिव परमात्मा से समीप सम्बन्ध होने के कारण वह योगी बन जाता है।

व पालना करने वाला भी बनाना है, ज्ञान के गहन चिन्तन द्वारा अपने विवेक को भी दिव्य करना है और सबको सन्तुष्ट करने के संस्कार भी स्वयं में भरने हैं। पवित्रता की गुहा व्याख्या हम सब ईश्वरीय महावाक्यों में सुन चुके हैं। इस बल से स्वयं को ऐसा चरित्रवान बनाना है ताकि किसी भी जन्म में चरित्रहीनता का आरोप हम पर न लगे। हमें स्वयं में राजाई गुण व राजाई संस्कार भरने हैं, तब हम राज्य-अधिकारी बनेंगे, मात्र प्रजा बना लेनेसे कोई राजा नहीं बनता। प्रजा तो किसी शक्तिशाली राजा द्वारा छीनी भी जा सकती है।

ईश्वरीय महावाक्य है-विश्व राज्य-अधिकारी बनने वालों को सहयोग हर आत्मा

को किसी-न-किसी रूप में प्राप्त होगा, वे सर्व के सहयोगी होंगे। प्रकृति भी उन्हें अपना मालिक स्वीकार करेगी। राजा, दाता होता है, इसलिए उसे अन्नदाता भी कहते हैं। सफल राजा वे हुए जिन्होंने अपना सर्वस्व प्रजा को सुखी करने में लगा दिया, भले ही इसके लिए उन्हें स्वयं भी कष्ट सहना पड़ा हो। परन्तु जो राजा प्रजाके धन को अपने भोग-विलास में गंवा देता है, अन्ततः उसे राजाई से हाथ धोना पड़ता है।

राजयोग को तपस्या में हम स्वयं को पूर्वज की स्थिति में स्थित करवें, मास्टर पालनहार बनकर शान्ति, पवित्रता व शक्तियों के प्रकम्पन फैलाते हैं। इन सूक्ष्म तरंगों से इस समय मनुष्यात्माओं की पालना होती है और प्रकृति पावन बनती है। जिसने अपने योग का स्वरूप दातापन का बना लिया है वह निरन्तर पालना कर रहे हैं और वहीं राज्य-अधिकारी बनेंगे।

राजा को प्रजा माता-पिता के रूप में निहारती है। राजा की दृष्टि में भी प्रजा के प्रति पितृभाव रहता है। इससे समस्त राज्य में परिवार की भावना बनी रहती है। राजा पुत्रवत् ही प्रजा का ध्यान रखता है, न्याय करता है और सबकी बातें सुनता है। तपस्वी भी स्वयं को परमात्मा पिता समान स्थिति में स्थित कर लेता है। वह अकेला और सूखा संन्यासी बनकर नहीं रहता वरन् दूसरों को मात-पिता की महसूसता कराता है। उसकी शुभकामना भी यही रहती है कि सभी सुखी हो और निर्भय हों, सबको न्याय मिले।

सच्चा योगी सभी की बातें सुनकर उनका हल प्रदान करता है। जो स्वर्ग के राज्य-



भोपाल। गोडस विजडम फॉर इनर पीस एण्ड ग्लोबल हारमनी, कार्यक्रम के पश्चात समूहचित्र में प्रो. कमल दीक्षित, ब्र. कु. रीना, पवित्र श्रीवास्तव, डॉ. पुराणेंद्र पाण्डे, मधुकर द्विवेदी तथा अन्य।



भैरवाह-नेपाल। स्नहमिलन के कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र. कु. सुरेंद्र, ब्र. कु. शांति, व्यापार मंडल के अध्यक्ष विष्णु शर्मा तथा समाजसेवी दिलीप भट्टराई, ब्र. कु. दिनेन्द्र व ब्र. कु. भूपेंद्र।



कटक। बहरें और गुंगे के लिए आध्यात्मिक ज्ञान को डीवीडी रिलीस करते हुए ब्र. कु. जयंति, लन्दन, कमिश्नर, एच. के. त्रिपाठी, अरूण प्रसाद, ब्र. कु. कमलेश तथा अन्य।



दिल्ली-आर.के.पुरम। गीता के भगवान का अवतरण कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए दिल्ली कांग्रेस के अध्यक्ष सांसद जयप्रकाश अग्रवाल, ब्र. कु. अमोरचंद, ब्र. कु. उर्मिला ब्र. कु. अनिता।



गुलबर्गा। डेप्यु. कमिश्नर लता कुमारी, आईएस को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र. कु. विजया साथ में ब्र. कु. प्रेमसिंह।



करवेंनगर-पुने। नगरसेविका सुरेखा मकवानजी का सवागत करते हुए ब्र. कु. नीरूबहन।

झूठा गर्व

यूनान के एटिका प्रांत में एक जमींदार रहता था, वह जमींदार बहुत धर्मडी था। उसे अपनी जागीर पर बहुत गर्व था। जो कोई भी उसके पास आता, उसके सामने अपनी संपन्नता की डींग हांकने लगता।

एक बार वह यूनान के महान दार्शनिक सुकरात के पास गया। वहां भी वह चाहता था कि सुकरात उसके वैभव की बड़ाई करे। दार्शनिक सुकरात के लिए यह संभव नहीं था। पहले तो वे उस धर्मडी जमींदार की बातें सुनते रहे। फिर अपनी अलमारी से दुनिया का नक्शा निकाला। उसे जमीन पर फैलाकर जमींदार से पूछा-क्यों भाई, इसमें यूनान कहाँ है?

धर्मडी जमींदार ने नक्से पर झट से उंगली रखकर बता दिया। दार्शनिक सुकरात ने फिर प्रश्न किया, इसमें तुम्हारा एटिका प्रांत कहाँ है? धर्मडी जमींदार काफ़ी देर तक नक्शों में देखता रहा। तब कहीं जाकर मुश्किल से अपना एटिका प्रांत ढूँढ सका। यह देख कर दार्शनिक सुकरात ने प्रश्न किया, इसमें तुम्हारी जागीर कहाँ है, भाई?

इस पर वह धर्मडी जमींदार परेशान-सा होकर बोला, श्रीमन्! इस नक्शों में इतनी छोटी-सी जागीर कहाँ दिखाई जा सकती है?

तब दार्शनिक सुकरात ने मुस्कराकर कहा, भाई फिर तुम अपनी जागीर और वैभव का इतना गर्व किसलिए करते फिरते हो? तुम्हारी जिस जागीर के लिए इन नक्शों में एक बिन्दु भी नहीं दिखाया जा सकता, उसके लिए इतना झूठा गर्व करना व्यर्थ है।

मूल्य शिक्षा तालिम...

पेज 1 का पेज

ही सच्ची शिक्षा है। जहाँ यह दोनों हैं वहाँ देश व समाज का नाम रोशन होता है। एक सभ्य समाज का निर्माण होता है। उन्होंने कहा कि शिक्षक का उत्तरदायित्व ऐसे भगीरथ कार्य के लिए है।

प्रो. स्वामीनाथन ने बहुत ही सुंदर और प्रभावशाली शैली में इफेक्टिव टीचिंग थ्रु मेमोरी मेनेजमेंट एवं ईमोशनल स्कूल के विषय पर अपने विचार वक्तव्य किए। समग्र कार्यक्रम सुबह नव बजे से दोपहर एक बजे तक सफल रूप से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के पश्चात सभी शिक्षकों ने ब्रह्माभोजन स्वीकार किया। इस ट्रेनिंग प्रोग्राम का सफल संचालन का कामरेज सेवाकेन्द्र की संचालिका रोमाबहन ने किया।

सोच से परस्थिति ... पेज 1 का शेष

कभी दो के बीच कुछ बात हो भी जाए, तो उसे तुरंत खत्म कर स्वयं को बचाने की कृपा स्वयं पर करना चाहिए। घटित घटना के बाद जो विचार चलते हैं और बार-बार उसके बारे में सोचते रहना अपने को दर्द के घाव को और गहरा बनाने के समान है। उन्होंने खचा-खच भरे आडिटोरियम में उपस्थित गणमान्य लोगों के प्रश्नों का सटीक उत्तर देकर सबका दिल जीत लिया। और बातों बातों में सहज व जीवन उपयोगी शिक्षा व सावधानी दी।

प्रसिद्ध सीने कलाकार सुरेश ओबेराय ने अपने अनुभव सुनाते हुए कहा कि क्रोध को जीतने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान बहुत जरूरी है। आध्यात्मिकता से संबंधों में मधुरता आती है। एक-दूसरे के प्रति सम्मान व आदर की भावना प्रद्वारा होती है। उन्होंने अपने जीवन में आये बदलाव का अनुभव सुनाए। और बताया कि जब कोई एक कर सकता है ता सभी के लिए वह करना आसान होता है।

ब्र.कु.शौला ने सबका का सवागत किया। कार्यक्रम बहुत ही शांतिमय व उमंग-उत्साह के माहोल में सम्पन्न हुआ।

स्वयं की साधना...

पेज 2 का शेष

-विश्वास नहीं रहेगा और उसका शोषण नहीं किया जा सकेगा और उसे भेड़ों की तरह खदेडा नहीं जा सकेगा। उस पर आदेश और हुकम नहीं चलाया जा सकेगा। वह स्वयं के प्रकाश से जिएगा, वह स्वयं का अंतः प्रेरणा से जिएगा। उसके जीवन में अद्भूत सौंदर्य और एकाजूटता होगी। यही भय है समाज को एकजूट हुआ व्यक्ति आत्मनिष्ठ हो जाता है और समाज तुम्हें एक पर्सनैलिटी (व्यक्तित्व) बनना सिखाता है। पर्सनैलिटी सत्य समझने जैसा है। यह आत्मनिष्ठ परसोना मूल रूप आता है- परसोना का अर्थ है एक मुखौटा। समाज तुम्हें एक झूठी धारणा दे देता है, कि तुम कौन हो, वह तुम्हें एक खिलौना थमा देता है और तुम सारा जीवन उस खिलौने से चिपका रहते हो, एककीपन व एकांत में बैठकर जितना गहराई में जाना, साधना को तीक्ष्ण बनाना है। स्व-स्वरूप को अनुभूति को आनंद के सागर में खोना है।

खुश रहकर कर्म करें

हमने ये समझ लिया कि आप जिस खुशी की बात कर रहे हैं वो हमारी स्थिरता को दर्शाता है। व्यक्ति चाहे कुछ भी कर रहा हो, परिस्थितियाँ चाहे कुछ भी हो लेकिन हमें दृढ़ रहना है। मैं खुद स्थिरता निर्मित कर सकती हूँ अर्थात् मैं अपनी खुशी को खुद स्थिर कर सकती हूँ वो ऊपर-नीचे नहीं होगा। सुबह उठकर आप अपने मन को खुशी के संकल्पों से भर दे तो आपको खुशी दिनभर स्थिर रह सकती है। लेकिन कौन-सी ऐसी बातें हैं जो हमारी खुशी को मुझसे छीन लेती है, अभी भी कुछ चीजें ऐसी हैं जो दिनभर में होती हैं और मुझे पता ही नहीं चलता कि वो क्यों हो रहा है और जो स्थिर है वो ऊपर-नीचे जाना शुरू कर देता है। तो हम आगे इस पर बात करते हैं-

प्रश्न - मैंने तय तो कर लिया ठीक है मैं ही वो विचार निर्मित करूँगा कि 'मैं एक खुश रहने वाली आल्फा हूँ।' हमने बात की थी मेडिटेशन के दौरान दिन-भर में ऐसा क्या हो जाता है, ऐसी कौनसी बातें हैं, अगर उन पर आज हम देखने की कोशिश करें, जिससे वो फिर धीरे-धीरे खत्म होने लगते हैं।

उत्तर - सबसे पहले हमारी यह धारणा बदल गई कि मुझे खुशी चाहिए। अब ये बदलकर हो गया 'मैं खुशी में ही रहने वाली आल्फा हूँ' और फिर दूसरा हमने ये समझा कि मेरी खुशी किसी पर निर्भर नहीं है चाहे व्यक्ति हो या वस्तु हो और ये कहीं बाहर से नहीं आनी है बल्कि वह हमारे अंदर है। मैं सब कुछ यही सोचकर कर रही थी कि इससे मुझे खुशी मिलेगी। अब मुझे ये निर्णय करना है कि मुझे खुश रहकर यह सब करना है या फिर मुझे खुशी के लिए ये सब करना है। एक है ये करना है, फिर खुशी मिलेगी और एक है खुश रहना है अर्थात् खुश रहकर ये करना है। जैसे ही हम सुबह उठते हैं, हमारी पहली सोच क्या होती है? यह बहुत बड़ा प्रश्न चिन्ह है सभी के लिए। अगर मेरी पहली सोच ये होती है ओहो! सुबह हो गयी, अब उठना है। अब इसके बाद यह विचार आता है कि मुझे जल्दी से काम पर जाना है। जो व्यक्ति 'रखने को/छोने को' सोचकर काम करेगा वो कभी भी खुश नहीं हो सकता। पहली बात तो हमें ये समझना पड़ेगा कि मैं क्यों काम पर जा रहा हूँ, हम ये सोचकर न बैठ जाये कि आपको काम पर जाना ही है। लेकिन हम खुद जाते हैं ये सोचकर कि इससे मुझे पैसा मिलेगा, इससे से मैं बहुत सारी चीजें खरीदूँगा जिससे मुझे खुशी मिलेगी।

अब हमें इसे बदली करना है कि मैं पहले ही खुश हूँ और मैं अपनी खुशी से काम पर जा रहा हूँ। अब प्रश्न उठता है कि किसलिए काम पर जाना है क्योंकि वहाँ से लाना है और उससे खुशी आयेगी। अब ये हो सकता है कि मुझे काम पर जाना है वो तो ठीक है, वो पारट तो है ही हमन का। लेकिन हमें एक अलग उद्देश्य के लिए जाना है। हमारा उद्देश्य ये होना चाहिए कि ये जो



हमारे मूल्य है प्यार, शांति और खुशी आज मैं सारा दिन जिससे मिलने वाली हूँ तो मुझे हर एक से इस उर्जा को लेन-देन करना है। हमें ये संकल्प करना है कि मैं काम पर इसलिए जा रहा हूँ जिससे मुझे हर एक से इस उर्जा को आदान-प्रदान करने का अवसर मिले। इससे मेरे पूरे जीवन का उद्देश्य ही बदल जाता है। इसके लिए हमें अपनी भाषा से 'होने को' शब्द को निकालना होगा।

प्रश्न - मैं तो विश्वास ही नहीं कर सकती कि मैं सुबह उठूँ और ये सोचूँ कि आज मैं काम पर जाऊँगी तो हरेक से प्यार और खुशी की उर्जा का लेन-देन करूँगी या हम ये सोचें की मेरा बॉस क्या करने वाला है?

उत्तर - आप सारा दिन चेक करे कि ऑफिस में आपका दिन कैसा बीतता है, आप पायेंगे कि यह उस पर निर्भर करता है कि सुबह मैं हमने कौन-सी सोच निर्मित की थी। फिर इसके आधार पर आपकी अगली सुबह की सोच निर्भर करती है। अगर मेरा ऑफिस का अनुभव सारा दिन संघर्षपूर्ण रहा या बहुत ज्यादा ऊपर-नीचे रहल तो आप देखेंगे की इसका प्रभाव हमारे अगले दिन पर भी पड़ता है। मैं कल क्यों देखूँगी, मुझे जाना है एक मजबूरी है। लेकिन हम अपने काम पर स्थिरता के साथ जायें, सारा दिन मैं मैं जिनके साथ भी मिलूँ, उनके साथ ये उर्जा का लेन-देन करूँ। यदि मैं छोटी-छोटी बातों में अशांत नहीं होती तो मेरा पूरा दिन कैसा बीतेगा? वो दिन अन्य दिनों की अपेक्षा बहुत अच्छा बीतेगा और हम स्वयं को सारा दिन ऊर्जावान महसूस करेंगे। खुशी और प्यार एक ऐसी उर्जा है इसको हम जितना बाँटते जायेंगे ये मेरे अंदर उतनी ही बढ़ती जाती है। अगर मैं ऑफिस जाकर 10, 20 या 50 लोगों से मिलने वाली हूँ और वो उर्जा हर समय लेन-देन करती रहूँ तो वह हमारे अंदर स्वतः ही बढ़ती जायेगी और इसके लिए पहले आप रात को वो विचार निर्मित करके सो जाओ। ये भी बहुत महत्वपूर्ण है कि रात को हम क्या प्रोग्रामिंग करते हैं। और वो सोच हमारे मन पर स्वतः ही 'पप-पप' करेगा। ये सुबह एकदम से याद नहीं रहने वाला है, आधा काम तो आप रात को ही कर दो। रात को ही स्वयं को अगले दिन के लिए तैयार कर लो कि मेरा अगला दिन कैसा बीतेगा और आप इसे अनुभवस्वरूप करो। इसे आप अपने को मानसिक रूप से मजबूत करें, हम सोचते हैं कि ये तो समझ में आ गया, ये तो अपने-आप हो जायेगा लेकिन ये अपने आप नहीं होगा।

जब हम अपने विचारों को देखना शुरू करते हैं तो जहाँ कमजोर संकल्प दिखायी दे उसे वहीं पर शक्तिशाली संकल्प से बदल दो। हमने पहले ही देखा कि संकल्प अनुभूति को उत्पन्न करती है। ठीक है संकल्प के स्तर पर हमें पता नहीं चला लेकिन अनुभूति से तो पता चल जाता है कि अच्छा है या बुरा है क्यों न हम अपने संकल्प को ही चेंज कर दें। जैसे ही हम ये संकल्प क्रियेट करते हैं कि 'मुझे काम पर जाना है' तो कैसी अनुभूति निर्मित होती है? मैं काम पर जाना चाहता हूँ तो इससे कैसी अनुभूति उत्पन्न होगी? इसे आप अगली सुबह कोशिश करके देखो। आप अनुभव करेंगे कि हम यही सोचकर काम पर जा रहे हैं कि ये मेरी मजबूरी है, ये मुझे करना पड़ता है, जबदस्ती है। इससे कौन-सी उर्जा प्रवाहित होगी? आप किस उर्जा के साथ काम करेंगे?

अब वो नहीं मैं सकारात्मक संकल्प निर्मित करती हूँ तो इससे मेरा सारा दिन अच्छा बीतता है। ये अपने-आप निर्मित नहीं होता है बल्कि इसे करना पड़ता है। आप अपने-आप से दो मिन्ट बात करे आपकी पहली प्रुबार्मिंग स्वयं के साथ होनी चाहिए। यह बहुत ही महत्वपूर्ण है। और दो मिन्ट हम जो अभ्यास करते हैं उसको सुबह में रोज करना शुरू कर दें। (क्रमशः)



जम्मु। यशोकरण पार्क का उद्घाटन के अवसर पर मुख्यमंत्री शौला दीक्षित के साथ ज्ञान चर्चा करने के बाद ब्र.कु. सुदर्शन साथ में डॉ. कारण सिंह तथा अन्य।



विदडा-कच्छ। जर्मन काउन्सलर जोबट को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र. कु. जागृति व ब्र.कु.लीना।



विजनौर। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए जिला अधिकारी जयदीप सिंह, स्वामी ओम्प्रकाश, ब्र.कु. सुरेश, ब्र.कु. साधना तथा ब्र.कु. भारत भूषण।



चोंदपुर-पंजाब। आज की शाम शिव पिता के नाम कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए एस.डी.एम. ब्र.कु. अवीनाशा ब्र.कु. साधना, ब्र.कु.भारत भूषण तथा अन्य।



छतरपुर। महिला दिवस पर कार्यक्रम के दौरान संमाजसेवी सैनी, गायत्री परिवार तथा डॉ.शकुन्ता चौबे को सम्मानित करते हुए ब्र.कु.रीना।



इन्दौर-प्रिकांको कालोनी। साध्वी ऋतुम्भरा दीदी सेवाकेन्द्र पर स्वागत करते हुए ब्र.कु. अनपूर्णा।

अहिंसा मानव जीवन की कुंजी

हरेक धर्म अहिंसा का पाठ ही पढ़ाता है। धर्म एक ऐसा प्रमाणित पथ है जो हमें मार्गदर्शित करता है कि जीवन यात्रा में चलते हुए शांति, प्रेम और आनंद का अनुभव करने के लिए क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। अगर आप ये करोगे तो खुश रहोगे। और अगर ऐसा करोगे तो दुःखी होंगे। धर्म हमें हमेशा यही सिखाता है कि जीवन में सदा खुशीयाँ कैसे बनाए रखे।

हम सदा खुश रहना चाहते हैं, हमें शांति और प्रेम भी चाहिए। इन खुशीयों में कोई उतार चढ़ाव न आ जाए, हम अपने श्रेष्ठ आनंद की स्थिति से कभी नीचे न उतरे इसलिए धर्म हमें सिखाता है कि हम अपने मन और अन्तःसंचेतना को प्रार्थना, धारणा, प्ररोपकार और अच्छे कर्मों से मजबूत और स्थिर कैसे बनाएँ। यह बातें हमें सुकून देती हैं। यह जानते हुए कि हम जैसे कर्मों की फसल बोयेगे वैसा ही फल हमें मिलेगा हम किसी के व्यवहार से दुःखी होने पर भी बदले में अनको दुःख देने से बचते हैं। इसलिए हम विशेष प्रयास यही करते हैं कि हमसे किसी को दुःख न मिले, हम सबको माफ करें ताकि दूसरों से भी हमारे साथ ऐसा ही व्यवहार किया जाए। परंतु यह प्रयास अक्सर हम कर्म और बोल तक ही सिमित रखते हैं लेकिन उन्होंने हमें दुःख दिया है ऐसा हम सोचते और विश्वास रखते हैं, हम मन से सूक्ष्म रूप से उन्हें बददुआ देते रहते हैं, हम चाहते हैं कि जैसे उन्होंने हमें दुःख दिया है, बदले में उन्हें भी दुःख मिले।

हमने हाथ मिलाना और बातें करने के स्तर पर संवाद की कला में महारत हासिल कर ली है। हम बहुत मीठी और प्यारी और हलके से बातें करते हैं, लेकिन अपने विचारों में कड़ुवे और असभ्य बने रहते हैं। जीवन अनेक छोटी-छोटी घटनाओं से जुड़कर बनता है जिनके माध्यम से हम अपने आपको प्रत्यक्ष करते हैं और उनका अनुभव करते हैं। प्रत्यक्षता पहले विचारों से होती है फिर शब्दों से और उसके बाद कर्मों से होती है। हम अपने काम को प्रत्यक्ष करने के लिए कौनसी सामग्री का इस्तेमाल करते हैं उसपर हमें मिलने वाले अनुभव का स्तर निश्चित होता है। अक्सर जब औरों को सलाह या मदद देनी होती है तो हम धर्म युद्ध के रक्षक की भूमिका ले लेते हैं, हम न्यायाधीश बनकर उनके हर कदम को गलत साबित कर दोषारोपण करने की अपने आप को ही अनुमति दे देते हैं। इस तरह का परिधान ठीक नहीं है, उन्हें इस तरह नहीं बोलना चाहिए, यह कोई तरीका नहीं है चलने, हसने- बोलने और अपने आप को लोगों के सामने प्रत्यक्ष करने का आदि आदि..... हम दूसरों को सदा बदलने के लिए दबाव डालने का अधिकार अपने हाथ में ले लेते हैं। दूसरों को बदलने के लिए दबाव डालने की इस प्रक्रिया में हम यह भूल जाते हैं कि सतत पडने वाले नकारात्मक प्रभाव के कारण उनका आत्मसम्मान निरंतर कम होता जा रहा है। हमने मुख्यतः किसी को दुःख या तकलीफ न देने का सोचा है। इस प्रक्रिया में हमने अपने शब्दों और कर्मों पर तो ध्यान दिया लेकिन विचारों पर नहीं। कई बार तो हमने अपने आप को समझाया कि थोड़ा सा कडवा बना, दुःख देना या गुस्सा करना ठीक है क्योंकि हम

उनकी सँभाल करना चाहते हैं और इसमें ही उनका भला है। हम अपने किये को उचित ठहराते हैं बिना यह महसूस किये कि हमारे कर्म की कितनी कीमत चुकानी पड़ेगी। हम अपने आप को सही और उचित समझते हैं बिना इस बात पर गौर किये कि यह तो केवल हमारे मानसिक वृत्ति का प्रतिबिम्ब मात्र है।

यह स्वीकार करना कठिन है लेकिन हमने दूसरों के लिए लिया हुआ हरेक फैसला, कर्म या परिस्थिति हमारे भीतरी आईने का प्रतिबिम्ब मात्र है यही सही है। अगर दूसरे हमारे फैसलों और राय का सम्मान नहीं करते तो स्वभावतः हम उनको दोषारोपित कर उनके साथ अपने संबंधों पर पूर्णविराम लगा देते हैं और आगे बढ़ते हुए उनको उनके भाग्य पर छोड़ देते हैं।

भले मैंने अपने होठों को सी लिया हो या कितना भी मुलायम और अच्छा बनने की कोशिश की हो लेकिन मानसिक कर्म द्वारा किसी को दुःख देना एक तरह से हिंसा ही है जिससे विचारों की उत्पत्ति होती है। अगर मैं किसी को गलत ठहराता हूँ तो तुरंत वह नकारात्मक प्रकंपन उस

हमारे सकारात्मक उर्जा प्रवाह में उतार चढ़ाव का वगारण है भावनात्मक अस्वस्थता। यह स्वयंनिर्मित दर्द है, जो खुद को ही दुःखी करता है। परिस्थितियाँ एवं व्यक्ति जैसी हैं वैसे ही अगर उनका स्वीकार किया जाए तो इस स्वयंनिर्मित दुःख से बचा जा सकता है।

तक प्रवाहित होते हैं और उनके अन्दर असंतुष्टता की भावना को पैदा कर उनके स्वमान को कम कर देते हैं। कर्म के सिद्धांत के अनुसार हमें यह समझना चाहिए कि हमारे विचारों की हलचल भी हमारे सूक्ष्म कर्म ही है और भावनाएँ उनसे जनित प्रतिक्रियाएँ हैं जिसके लिए हमारे अपने विचार ही निमित्त बने हैं हमारे कर्म-न्युटन के गति के तिसरे नियम के आधार पर कार्य करते हैं। हरेक कर्म के साथ उसका उतनी ही और विरुद्ध प्रतिक्रिया जुड़ी हुई है और यह उर्जा अवैयक्तिक और शक्तिशाली होती है। इस बात की अच्छी तरह से व्याख्या की गई है कि कर्म नैतिक उर्जा नहीं है अपितु नैतिकता मानवनिर्मित है। कर्म के सिद्धांत हमारे भीतरी नैतिक व्यवस्था और हमारे पड़ोसियों के बीच के तालमेल को प्रभावित करते हैं। जो तय करते हैं कि हमारे अनुभवों के लिए हम स्वयं जिम्मेदार हैं।

हरेक कर्म, विचार और भावना किसी न किसी उद्देश्य से प्रेरित होती है और वही उद्देश्य ही कारण बनकर उनके परिणामों में भी निहित होता है। अगर हम कारण में संमिलित हैं तो ऐसा हो नहीं सकता कि हम उसके परिणाम को हिस्सा न हो। इस तरह से हमारे हरेक कर्म, विचार और भावना के लिए हम खुद ही जवाबदार हैं जिससे हमारे उद्देश्यों की

प्रत्यक्षता होती है। बुद्धिमत्ता इसी में है कि हम अपने उन उद्देश्यों को पहचानें जो हमारे अनुभवों में बदलने वाले हैं इसलिए हम जिस तरह के अनुभव की अपेक्षा रखते हैं, बड़ी बुद्धिमानी से ऐसे ही उद्देश्यों का चयन करें।

किसी को भी गलत या सही साबित करना यह हमारे सही और गलत की अपनी ही धारणाओं पर आधारित होता है। किसी को गलत कहकर उसे बदलने का दबाव डालना यही साबित करता है कि आपमें सहन करने और समाने की आन्तरिक शक्ति की कमी है।

स्वयं के साथ अहिंसा के सुनहरे नियम के साथ अहिंसा की शुरुवात होती है। इस धारणा के साथ जाएँ यही अहिंसा की तरफ पहला कदम होगा। जब हम आहत होते हैं तो किसी को आहत न करें ऐसा हो नहीं सकता। इसलिए आध्यात्मिकता में न किसी को दुःख दो न किसी से दुःख लो इस धारणा को सुदृढ़ किया जाता है। दुःख कैसे ना लें ? बाह्यतत्त्वों के प्रभाव के कारण होने वाली भावनात्मक अस्वस्थता जैसे चिड़चिड़ापन, अधैर्यता, असंतुष्टता का सीधा परिणाम यही है कि हम दूसरों के जज बनने लगते हैं। हमारे सकारात्मक उर्जा प्रवाह में उतार चढ़ाव का कारण है भावनात्मक अस्वस्थता।

यह स्वयंनिर्मित दर्द है, जो खुद को ही दुःखी करता है। परिस्थितियाँ एवं व्यक्ति जैसी हैं वैसे ही अगर उनका स्वीकार किया जाए तो इस स्वयंनिर्मित दुःख से बचा जा सकता है। जब यह लाक्षा फैलता है तो इन्सान इसमें खुद ही झुलस जाता है। कर्म के इस सिद्धांत से बचने के लिए हमें और अधिक सतर्क होना पड़ेगा और जितना हो सके उतना दूसरों के जज बनना छोड़कर कोई कुछ भी करें उनके प्रति अपनी नकारात्मक भावनाओं को बहने से रोकना होगा। जब मैं दुःख या अन्य नकारात्मक भावनाओं को दर्द के साथ प्रत्यक्ष स्वरूप देता हूँ तब कर्म बनता है।

जब अपने अस्तित्व के महत्व की शक्तिशाली समझ होगी तब हम कर्म के खातों के उतार चढ़ाव को स्वीकार कर उसे सुधार सकते हैं। मेरे अन्तःसंचेतना के भीतरी स्तरों पर मैं अपने बारे में क्या सोचता हूँ, जो सम्मान मैं अपने लिए रखता हूँ यही मेरे आध्यात्मिक शक्ति और मूल्य के निश्चित का आधार है। मेरे कार्मिक असंतुलन को सुधारने के लिए मुझे न केवल असंतुलन के कारण एवं निवारण को ही नहीं समझना होगा अपितु एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व के रूप में अपने आप को शक्तिशाली भी बनाना होगा। अपने आप के साथ एक अच्छा और सौहार्दपूर्ण सम्बंध बनाइएँ। अपनी भावनाओं में छिपे संकेतों को पहचानें अपने दर्द से कुछ सिखें और अपने कर्मों जवाबदारी खुद ले। दूसरों को माफ करें और उन्हें शुभभावना और सकारात्मकता के प्रकम्पन भेजें। बीती को बीती करे, सहानुभूति अवश्य रखें लेकिन दूसरों के दर्द से अप्रभावित रहें। बातों को अपने आप से जोड़कर व्यक्तिगत होने से बचें। इस बात को समझें कि अपने विचारों के निर्माता हम स्वयं हैं और इसी शक्ति से हमें खुशी मिलती है। अतः केवल खुशी का ही आदान प्रदान करें।



जूई कलों-हरियाणा। मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा का स्वागत करते हुए ब्र.कु. निर्मला बहन।



फतेहड़। सेवा केन्द्र पर जिला अधिकारी पवन कुमार आई ए एस का स्वागत करते हुए ब्र.कु. सुमन।



रांझी-जबलपुर। कार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्वलन कर करते हुए महन्त रामानंद पुरीजी महाराज, प्रभा शंकर कुशावाहा अध्यक्ष, जेडीए, कार्नाल अजय कश्यप, डॉ.पुष्पा पाण्डेय ब्र.कु. भावना ब्र.कु. राजनी।



जम्मू। कार्यक्रम के दौरान विधायिका रानी बिलोवारिया को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सुदर्शन साथ में ब्र.कु. रविन्द्र।



मिर्जापुर। पुलिस अधीक्षक सुरेश चन्द पाण्डेय को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. विन्दु।



वाड़मेर। वाड़मेर रेंज के डी.आई.जी. माधू सिंह चौहान के साथ ज्ञान चर्चा करने व ईश्वरीय प्रसाद देने के पश्चात् शान्तिवन के बबन भाई, चन्दन भाई व प्रदीप भाई।



दसुआ। पंजाब के मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल को ओमशांति मीडिया भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमन बहन।



नाभा। केन्द्रीय विदेश राज्य मंत्री परनीत कौर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. गुलशन, साथ में ब्र.कु. रेखा, सुशील कुमार जैन, पंजाब केसरी के वरिष्ठ पत्रिकार, कुसुम जैन व जीतिया जिन्दल।



नालागढ़। पत्रिकारों के साथ ज्ञान चर्चा करने के पश्चात दिव्य हिमाचल के अरुण पाठक जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. गौरव, ब्र.कु. राधा साथ में पंजाब केसरी के शेर सिंह, व शालीम तथा अन्य।



नवांशहर-पंजाब। बलदेव सिंह बल्लो, डीपीआरओ, को ओमशांति मिडिया द्वारा सेवाओं की जानकारी देने के पश्चात ब्र.कु. राम भाई, पीआरओ, रवीन्द्र सिंह तथा ब्र.कु. पोखर।



अतरैला-रीवा। कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए विधायक राजकुमार उर्मिलिया साथ में ब्र.कु. निर्मला।



सिरसा। जागृत करे अपनी छिपी हुई प्रतिभाओं को कार्यक्रम के दौरान राज सिंहजी एसएसपी, शिव प्रसाद, एडीसी, को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. स्वामीनाथन एवं ब्र.कु. विन्दु बहन।

विचारों का शरीर पर प्रभाव

आत्मा, मन और शरीर संरचना का विकासशील सिद्धांत

-डॉ. शतीष गुप्ता

विश्व स्वास्थ्य संघ ने स्वास्थ्य की परिभाषा की है -बीमारी का न होना मात्र ही स्वास्थ्य नहीं है वरन स्वास्थ्य सम्पूर्ण शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक कल्याण की स्थिति है। इस परिभाषा को मदेनजर रखते हुए इस दुनिया का कोई भी व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि वह सम्पूर्ण रूप से स्वास्थ्य है। आइये विकित्सकों के रोज के जीवन में घटने वाली एक घटना पर विचार करें।

एक बहुत गम्भीर रूप से बीमार व्यक्ति को आपातकालीन कक्ष में लाया जाता है। सेवा पर उपस्थित चिकित्सक मरीज को बचाने का भरसक प्रयास करता है परन्तु सफल नहीं होता। मरीज मर जाता है। चिकित्सक उसके मित्र-सम्बन्धियों से हाथ जोड़कर माफी मांगता है और कहता है इस मुर्दे को बाहर ले जाया जा रहा है। एक व्यक्ति का मत शरीर को बाहर ले जाया जा रहा है। दूसरा व्यक्ति मत देह में कैसे बदल गया क्या हुआ क्योंकि आत्मा चली गई है।

अब मान लीजिए कि इस देह से, सम्बन्धियों की सहमति से, आप हृदय, लीवर, किडनी आदि अंगों को निकाल कर किसी जरूरतमन्द व्यक्ति में प्रत्यारोपित कर देते हो तो वहां यह अंग काम करना शुरू कर देते हैं जबकि पहली देह में ये कार्यविहीन हो गए थे। क्यों क्योंकि आत्मा इस देह से चली गई थी।

आत्मा एक चेतन शक्ति है, जिसे इन चर्म चक्षुओं से नहीं देखा जा सकता केवल ज्ञान की आंखों से देखा जा सकता है। (जैसे बिजली की शक्ति इन आंखों से तार में प्रवाहित होती हुई नहीं दिखती परन्तु विभिन्न उपकरणों में कार्यरत इस शक्ति को ज्ञान के आधार से अनुभव किया जा सकता है) आत्मा शरीर की मालिक है जैसे एक ड्राइवर कार को चलाता है। जब आत्मा शरीर में है तो सभी अंग, प्रत्येक सुचारु रूप से कार्य करते हैं परन्तु जब आत्मा शरीर को परित्याग कर देती है तो सभी अंग कार्य करना बन्द कर देते हैं जैसे बिजली चली जाने के बाद सभी उपकरण जैसे-पंखा, फ्रिज, ओवन आदि कार्य करना बन्द कर देते हैं। स्थूल शरीर को नियंत्रित करने के लिए आत्मा के पास तीन सूक्ष्म शक्तियां हैं - मन, बुद्धि और संस्कार।

जैसे शीतलता जल का मूल गुण है और गर्मी और प्रकाश सूर्य के मूल गुण हैं। इसी प्रकार आत्मा के सात मूल गुण हैं - ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम खुशी, आनन्द और शक्ति सभी मूल गुण आध्यात्मिक शक्ति के रूप में हरेक कोशिका में प्रवाहित होते हैं और उसका पोषण करते हैं। हरेक कोशिका में प्रवाहित होते हैं और उसका पोषण करते हैं जैसे

शीतलता जल का मूल गुण है परन्तु यदि जल को गर्म कर दिया जाए तो अनेकों को जला सकता है और यदि कुछ घण्टों के लिए छोड़ दिया जाये तो यह पुनः अपनी शीतलता की मूल स्थिति में आ जाती है। इसी प्रकार आत्मा भी मूल रूप शान्त स्वरूप है परन्तु यदि बाह्य या आन्तरिक कारणों से यह गर्म (क्रोधित) हो जाए तो स्वयं को और दूसरों को भी हानि पहुंचा सकती है। लेकिन कुछ समय (क्रोध) के बाद पुनः अपने मूल शान्त-स्वरूप की स्थिति में लौट आती है।

स्थूल शरीर में विभिन्न अंग समूहों का विकास और पोषण

आत्मा अठारह सप्ताह या बीस सप्ताह के बाद गर्भ में प्रवेश करती है। यह शक्ति जब अपने पूर्व शरीर को त्यागती है और नए शरीर में प्रवेश करती है तो वह अपने पिछले जीवन की मूल शक्तियों का बचा हुआ संग्रह साथ ले आती है और यही सात मूल गुण शरीर की विभिन्न प्रणालियों को विकसित करते हैं और उनका पोषण करते हैं। हमारे शरीर में आठ अंग प्रणालियां हैं। जैसे - श्वसन प्रणाली, आमाशय और आंत सम्बन्धी प्रणाली आदि-आदि। आत्मा के सात मूल गुण इन सभी अंग प्रणालियों में प्रवाहित होते हैं और उनकी पालना करते हैं परन्तु गुण से ही विकसित होती है। जैसे दिमाग ज्ञान का केन्द्र है और हृदय प्रेम का केन्द्र है। इस सम्बन्ध को हम नीचे देखेंगे-

1. ज्ञान - मस्तिष्क प्रणाली
2. पवित्रता - पांच कर्मन्द्रियां (चेहरा)
3. शान्ति - श्वसन प्रणाली।
4. प्रेम - रक्त संचरण प्रणाली (हृदय)
5. खुशी - आमाशय और आंत सम्बन्धी प्रणाली।
6. आनन्द - उत्पादन प्रणाली (क) जोड़ (ख) संरचना

जोड़ के चार स्तर - आत्मिक स्तर पर, मानसिक स्तर पर, भावात्मक स्तर पर, शारीरिक स्तर पर,

7. शक्ति - मांसपेशी और ढांचा प्रणाली
8. सदभावना - उत्सर्जन (मल त्याग) प्रणाली में सभी मूल गुणों की सदभावना।

नकारात्मक विचार, भावनाएं, सिद्धान्त, स्मृतियां और नकारात्मक व्यक्तित्व चिन्ह, जैसे - अकेलापन, शत्रुता, भय, क्रोध, सामाजिक व्यवहार की कमी, प्रेम की कमी, असुरक्षा की भावना आदि के कारण हृदय में प्रेम का प्रवाह कम हो जाता है जिसके कारण गम्भीर हृदय रोग उत्पन्न होते हैं। आत्मा से प्रेम का प्रवाह हृदय को जितना मिलता है। इसी प्रकार अन्य अंग प्रणालियों में भी उन-उन प्रणालियों के विकास और पालना में आवश्यक मूल गुण का प्रवाह पूर्ण रूपेण न होने पर बीमारी उत्पन्न हो जाती है।

आत्मा की सूक्ष्म शक्तियां

1. मन - यह आत्मा का विचार शक्ति है इसके चार अंग (घटक) हैं। 1. संकल्प, 2. भावनाएं, 3. दृष्टिकोण और 4. स्मृतियां। यह आत्मा की मानसिक शक्ति है। यह मानसिक शक्ति प्रकाश का घेरा (सूक्ष्म शरीर) निर्माण करती है। आत्मा अपनी मानसिक शक्ति की तरंगें दिमाग के सभी केन्द्रों तक पहुंचती है। जैसे - विचार केन्द्र (हाइपोथैलामस), भावनाओं और दृष्टिकोण को केन्द्र (लिम्बिक प्रणाली), स्मृति केन्द्र (फोर्टल कोरटेक्स) श्वसन केन्द्र, वाक केन्द्र, दृश्य केन्द्र आदि ये सभी केन्द्र आदि ये सभी केन्द्र आत्मा के अति नजदीक हैं, आत्मा मानसिक शक्ति को स्थूल शरीर की एक-एक कोशिका तक प्रवाहित करती है। कई वैज्ञानिक यह मानते हैं कि मन केवल मस्तिष्क में ही नहीं वरन शरीर की प्रत्येक कोशिका में है। इसका अर्थ यही है कि मानसिक शक्ति का भी वही आकार है जो शारीरिक शक्ति का है। यह जाना माना तथ्य है कि शरीर के प्रत्येक अवयव में विद्युत तरंगें हैं, जिन्हें साइंस के उपकरणों से मापा जा सकता है (मस्तिष्क की कोशिका विद्युत तरंगों को Electro-Encephalo (E.E.G.) से मापा जाता है। हृदय की कोशिका विद्युत तरंगों को

Electro Cardiography (E.C.E) से मापा जाता है और मांसपेशियों की कोशिका विद्युत तरंगों को Electro Myography (E.M.G.) से मापा जाता है।

किरलियन फोटोग्राफी से हम किसी भी रोग के चिन्ह बाहर प्रगट होने से पहले अन्दर ही अन्दर जान लेते हैं। एक व्यक्ति जब अधिक समय तक सोचता है तो उसके चारों तरफ का ओरा सफेद रंग से किसी भी रंग में बदल जाता है। जैसे - बैंगनी, पीला, नीला या हरा आदि। और यदि मानसिक शक्ति का प्रवाह बिल्कुल नहीं है तो यह घेरा काला भी हो सकता है। मूल गुणों की शक्ति को शरीर के विभिन्न अंगों में पहुंचाने में मन शू (सम्बन्ध) का काम करता है। यदि मन नकारात्मक सोचता है तो समझों शू (सम्बन्ध) खराब है और आत्मा की सूक्ष्म शक्तियां विभिन्न अंगों तक नहीं पहुंचेंगी तथा शरीर का विशेष अंग जिस तक भी यह शक्ति नहीं पहुंचेगी वह बीमारी की चपेट में आ जायेगा। कौन-सा अंग ज्यादा पीड़ित होगा यह हमारे चारों ओर के वातावरण तथा पारिवारिक पृष्ठ भूमि से भी निर्धारित होता है, और इनका भी आधार हमारे पूर्व जन्म के अच्छे या बुरे कर्म होते हैं। बुरे कर्म आध्यात्मिक शक्ति को शोषित कर लेते हैं। और अच्छे कर्म इसमें वृद्धि करते हैं। जो अंग प्रणाली पाप कर्म के निमित्त बनती - शेष पेज 8 पर..

समस्याओं का आध्यात्मिक समाधान

अज्ञानी के लिए यह सारा संसार दुःखमय है, समस्याओं से भरा हुआ है। ज्ञानी के लिए यह संसार आनन्दमय है, समस्याओं से शून्य है। सब समस्याओं का समाधान है ज्ञानी होना, जानना और देखना। जो नहीं जानता, जो नहीं देखता, वह सदा समस्याओं से भिरा रहता है। जो जानता है, देखता है, वह समस्याओं का पार पा जाता है। सब समस्याओं का समाधान है जानना और देखना। यथार्थ में जितनी समस्याएं हैं, उतने ही समाधान हैं। कोई भी ऐसी समस्या नहीं है। जिसका समाधान न हो। समस्या नहीं है तो समाधान की कोई जरूरत ही नहीं है। प्रत्येक समस्या का समाधान है। किन्तु कोई समाधान ऐसा भी होता है, जो सब समस्याओं का समाधान होता है। सारी समस्याएं उससे समाहित हो जाती हैं। वह एक समाधान है- जानना, देखना। इसका अर्थ है- चेतना को जागृत करना। ज्ञान चेतना को जागृत करता है। अज्ञान का अर्थ है- वासना का चेतना पर हावी हो जाना। जब चेतना वासना से आक्रान्त होती है, तब वह घुमाती है, पहुंचाती नहीं। जब चेतना जागृत होती है, शुद्ध होती है, तब वह स्वयं एक मार्ग बन जाती है, जो लक्ष्य तक पहुंचा देती है।

एक होता है गोल चक्कर और एक होता है मार्ग। मार्ग पहुंचाता है। गोल चक्कर घुमाता है, किन्तु पहुंचाता नहीं। प्राणी-वैज्ञानिक डॉ. फेबरी ने कुछ कोड़ों को धाली में रखा। वह धाली गोल थी। कोड़े ऐसी जाति के थे जो अपने नेता के पीछे-पीछे चलते थे। नेता आगे चलने लगा। कोड़े पीछे-पीछे घूमने लगे। चक्कर लगाता प्रारम्भ हुआ। धाली गोल थी। सभी कोड़े गोलाकार घूमने लगे। वे तब घूमते रहे जब तक कि वे सब धक्कर गिर नहीं गए, मर नहीं गए। वे खूब चले पर पहुंचे कहीं नहीं, क्योंकि गोल चक्कर घुमाता है, पहुंचाता नहीं भटकाता है, पहुंचाता नहीं। केवल घूमना हुआ, पहुंचना नहीं हुआ।

यह काम का मार्ग गोलाकार मार्ग है। वह घुमाता है, पहुंचाता नहीं। समस्या का कोई पार नहीं आता, समस्या के पार तक नहीं पहुंचाता। चेतना का एक मार्ग है। मार्ग निश्चित हो पहुंचा देता है। हो सकता है कि दो दिन की जगह चार दिन लग जाएं फिर भी एक दिन पहुंचना हो जाता है। जो धीमी गति से चलता है, उसका मार्ग लम्बा हो सकता है, समय का कम बदल सकता है, किन्तु निश्चित हो जाती है, आदमी पहुंच जाता है। समस्याओं के समाधान का सबसे बड़ा मार्ग, सबसे पहला या सबसे अन्तिम मार्ग जो है, वह है चेतना को जागरण, चेतना की उद्बुधता, चेतना का विकास।

हमारी चेतना दो प्रकार की होती है-एक शुद्ध चेतना और एक वासनाप्रस्त चेतना। जो चेतना राग-द्वेष, प्रियता-अप्रियता के भाव से आक्रान्त होती है, वह वासना की चेतना है। वह शुद्ध चेतना नहीं होती, तटस्थ चेतना नहीं होती। उस चेतना से जो आचरण निकलता है, वह या तो प्रियता की ओर झुका हुआ होता है, या अप्रियता की ओर झुका हुआ होता है। उसमें एक झुकाव होता है, एक पक्षपात होता है, राग होता है या द्वेष होता है, प्रियता होती है या अप्रियता होती है किन्तु स्वतन्त्रता नहीं होती। वह द्वैतिकीयत्मक चेतना होती है। वह रिएक्शनरी चेतना होती है। उसमें रिएक्शन होता है, स्वतन्त्र भाव नहीं होता। जो चेतना शुद्ध है, वह क्रियात्मक होती है। उसमें कहीं भी झुकाव नहीं होता। न प्रियता की ओर होता है और न अप्रियता की ओर होता है। वहां पूर्ण तटस्थता होती है, पूर्ण स्वतंत्रता होती है। जहां जो होना है, वही होता है। वह वास्तव में एक मार्ग है। समस्याओं के समाधान का एकमात्र मार्ग है- शुद्ध चेतना का विकास।

जैन दर्शन ने तीन मार्ग बतलाए हैं- सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र्य। देखो, ज्ञान और कर्म। जब तक तुम देखते नहीं हो, जब तक तुम जानते नहीं हो, तब तक जो करते हो, वह पहुंचाने वाला नहीं होता, समस्या का समाधान देने वाला नहीं होता, वह घुमाता है, भटकाता है। सबसे पहली बात है- देखो- जानो या जानो-देखो। जानो और उसका साक्षात् करो, स्वयं अनुभव करो और फिर

उसका आचरण करो। यह त्रिपुटी है, मार्ग है। इसे महावीर ने मार्ग कहा है, मोक्ष का मार्ग कहा है। यह मुक्ति का मार्ग है, बन्धन से परे होने का मार्ग है, समस्याओं के समाधान का मार्ग है। यह मार्ग है, कोई समझदर नहीं है, कोई संस्थान नहीं है, कोई पैराव नहीं है, कोई बन्धन नहीं है। यह कोरा मार्ग है। मार्ग वह होता है, जिस पर किसी का अधिकार नहीं होता। जो सबका होता है, वह होता है मार्ग। उस पर किसी का प्रभुत्व नहीं होता। उसमें सब चल सकते हैं। किसी के लिए कोई बाधा नहीं होती। घेराव में बाधा होती है। मार्ग में बाधा नहीं होती। कोई भी चल सकता है इस मार्ग से और जो भी चलता है, वह पार पहुंच जाता है। यह मार्ग है- चेतना के रूपान्तरण का। यह मार्ग है वासना की चेतना को शुद्ध चेतना में बदलने का। यह मार्ग है दृष्टिकोण को बदलने का। यह केवल नाम बदलने का मार्ग नहीं है। कुछ लोग नाम बदलने में विश्वास करते हैं। नाम रख दिया, समाधान हो जाएगा।

एक होता है गोल चक्कर और एक होता है मार्ग। मार्ग पहुंचाता है। गोल चक्कर घुमाता है, किन्तु पहुंचाता नहीं। समस्याओं के समाधान का सबसे बड़ा मार्ग, सबसे पहला या सबसे अन्तिम मार्ग जो है, वह है चेतना को जागरण, चेतना की उद्बुधता, चेतना का विकास। चेतना का एक मार्ग है। मार्ग निश्चित ही पहुंचा देता है। हो सकता है कि दो दिन की जगह चार दिन लग जाएं फिर भी एक दिन पहुंचना हो जाता है। जो धीमी गति से चलता है, उसका मार्ग लम्बा हो सकता है, समय का कम बदल सकता है, किन्तु निश्चित हो जाती है, आदमी पहुंच जाता है। समस्याओं के समाधान का सबसे बड़ा मार्ग, सबसे पहला या सबसे अन्तिम मार्ग जो है, वह है चेतना को जागरण, चेतना की उद्बुधता, चेतना का विकास।

इससे समाधान सुलभ नहीं होता, प्राप्त नहीं होता। नामान्तरण हो जाता है, रूपान्तरण नहीं होता। होना चाहिए रूपान्तरण। एक छोटी-सी कहानी है। एक राजनेता ने कहा, आज से सब लोग श्रीखण्ड खाया करेंगे। कोई गरीब नहीं रहेगा। सबको श्रीखण्ड मिलेगा। किसी को छछ छपने की जरूरत नहीं है, उसके साथी ने कहा, बात तो ठीक है, इतना पैसा कहाँ है कि सब लोग श्रीखण्ड खरीद सकें। सरकार भी सबके लिए श्रीखण्ड सुलभ कर सके, वह भी कैसे सम्भव होगा? आपका सुझाव ठीक है, पर उसकी क्रियाविधि कैसे हो पाएगी? राजनेता ने कहा, चिन्ता मत करो। तुम कल से राज्य में यह घोषणा करवा दो कि कल से छछ को श्रीखण्ड कहा जाएगा और श्रीखण्ड को छछ कहा जाएगा।

घोषणा भी हो सकती है, नाम भी बदला जा सकता है। और बदले हुए नाम से गरीब श्रीखण्ड खाया करेंगे और भगवान छछ पीया करेंगे। यह होता है किन्तु तात्पर्य में कोई परिवर्तन नहीं आता। तात्पर्य कुछ भी नहीं बदलता, चाहे गरीब श्रीखण्ड के नाम से छछ पीते हैं और अमीर छछ के नाम से श्रीखण्ड खाते हैं। तात्पर्य में कोई अन्तर नहीं हुआ, नाम का परिवर्तन मात्र हुआ। मैं नाम-परिवर्तन की बात नहीं कहता, चेतना के रूपान्तरण की बात कहता हूँ। चेतना का रूपान्तरण होना चाहिए, चेतना बदलनी चाहिए। जब चेतना बदल जाती है, तब समस्याओं में से ही समाधान निकल आता है। भगवान् महावीर ने कहा, हे आसवा ते परिसवा, हे परिसवा ते आसवा। जो आसव है, समस्याएं हैं, वे सब

परिखर हैं, समाधान हैं और जो परिखर हैं, समाधान हैं, वे सब आसव हैं, समस्याएं हैं। बहुत मूल्यवान सूत्र है यह। इसी सूत्र के सन्दर्भ में कुछ समाधान प्रस्तुत हैं।

समस्या की चर्चा कर समय मैंने शारीरिक समस्या की चर्चा की थी। शरीर की पहली समस्या है कि वह अनिच्य है। अनिच्यता एक समस्या है, किन्तु अनिच्यता स्वयं एक समाधान है। हमारा सबसे घनीभूत मोह होता है शरीर के प्रति जितने मोह हैं जितनी आसक्तियां हैं, उन सबको जड़ में है शरीर का मोह। यह जितना घनीभूत होता है, उतनी आसक्ति प्रबल होती है। हम जब तक इस मोह को नहीं तोड़ देते, तब तक आसक्तियां समाप्त नहीं होतीं। हम जब तक इस मोह से उत्पन्न होता है भय और धय से उत्पन्न होता है तनाव। यह एक क्रम है- मोह, भय और तनाव। हम तनाव को मिटाना चाहते हैं कि शरीर में तनाव न रहे, टेशन न रहे। वह कैसे मिट सकता है, जब भय विद्यमान है। हमें इतना भय है कि शरीर झूट न जाए। यह वासना निरन्तर काम करती रहती है कि शरीर कहीं झूट न जाए। हमने शरीर को इतना शाश्वत मान लिया और शाश्वत मानकर एक भय पैदा कर लिया कि सोते-जागते वह भय काम करता रहता है। यह भय हमें निरन्तर तनाव-प्रस्त रहता है। इसलिए महावीर ने कहा, डरो मत। जब तक डरते हो, तब तक किसी भी धर्म का पालन नहीं हो सकता। न अहिंसा का पालन हो सकता है, न सत्य का पालन हो सकता है न अपरिग्रह का पालन हो सकता है। आदमी हिंसा इसीलिए करता है कि वह डरता है वह झूट इसीलिए बोलता है कि वह डरता है, और परिग्रह इसीलिए एकत्रित करता है कि वह डरता है। उसे भय ही परिग्रह का मूल है। इसीलिए महावीर ने कहा, डरो मत। मैं समझता हूँ कि तनाव को मिटाने का सबसे अच्छा सूत्र है- अभय, भय नहीं खाना, डरना नहीं।

यह भय कैसे मिट सकता है- यह एक प्रश्न है। महावीर ने कहा, भय को मिटाना है तो शरीर का विसर्जन कर दो। शरीर का त्याग कर दो यानी जीते हुए भी शरीर को छोड़ दो। आप जी रहे हैं, शरीर का त्याग किए हुए हैं। विरोधी-सी बात लगती है। हम जी रहे हैं। खा रहे हैं, पी रहे हैं, र्वास ले रहे हैं, और साथ-साथ शरीर का त्याग किये हुए हैं- यह कैसे येही तो एक मार्ग है। इसे ही तो हमें समझना है। सब कुछ शरीर से कर रहे हैं। और शरीर का उत्सर्ग और परित्याग किये हुए हैं। जब सब कुछ करते हुए भी शरीर को छोड़ने की बात हमारी समझ में आ जाती है तो भय भी चला जाता है। शरीर का उत्सर्ग अर्थात् शरीर सब कुछ कर रहा है, पर हम शरीर से भिन्न हैं। जब हम अपने आप को शरीर से अभिन्न मान लेते हैं, तब एक प्रकार की क्रिया होती है, एक प्रकार का आचरण होता है और जब हम अपने आपको शरीर से भिन्न मान लेते हैं, तब दूसरे प्रकार की क्रिया होती है, एक प्रकार का आचरण होता है। हमने शरीर के साथ इतना अभिन्नता, इतना तादात्म्य स्थापित कर रखा है कि मानो शरीर के लिए हम हैं, हमारे लिए शरीर नहीं है। होना तो यह चाहिए था कि हमारे लिए शरीर है, हम शरीर के लिए नहीं हैं। शरीर के प्रति स्थापित अभिन्नता और तादात्म्य के कारण जो शाश्वत का भाव उभरता और उसमें से मोह का भाव निकलता। महावीर ने कहा, शरीर के मोह को छोड़ो और वह भी विवेकपूर्वक, चेतना के जागरण के द्वारा, इस बोध के द्वारा कि शरीर पौद्गलिक है और मैं भेदा हूँ। चेतन और पौद्गल एक नहीं है। मैं पौद्गल से भिन्न हूँ। शरीर मुझे भिन्न है, मैं शरीर से भिन्न हूँ। शरीर एक ऐसा घर है, आवास है, कि जहां मैं कुछ दिन के लिए ठहरा हूँ। यदि यह भिन्नता का बोध बना रहता है तो शरीर के प्रति होने वाली मोह को प्रथिय सवन नहीं होती। जब मोह की प्रथिय सवन नहीं होती तो भय की प्रथिय भी सवन नहीं हो सकती। भय के अभाव में तनाव भी नहीं हो सकता। जो अनिच्यता का बोध आदमी को वैशेषी किए रहता है, एक समस्या बना रहता है यदि हम उस अनिच्यता का इस रूप में अनुभव करें तो वही अनिच्यता हमारे लिए समाधान बन जाती है। तनाव- विसर्जन का यही यथार्थ समाधान है।



कोरबा। जगन्नाथ पुरी के शंकराचार्य श्री निखलानन्द जी को ब्रह्माकुमारीजी की ओर से ईश्वरीय भेंट देते हुए ब्र.कु.विन्दू बहन



जबलपुर। मानवता की सेवा में व्यापार एवं उद्योग कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.विमला, ब्र.कु.अनिता, हेमलता, अजय प्रोवर, नारायण दास बुधरानी ब्र.कु.पुष्पावरी, लिज्जत पापड।



पतली कुल्ह हि.प्र.। मेम्बर, बीडीसी के प्रमिला ठाकुर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. संध्या, ब्र.कु.साधना साथ में ब्र.कु. हेमराज।



अलथान- सुरत। गृह मंत्री नरोत्तमभाई को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी साथ में ब्र.कु.क्रांति।



तरावडी करनाल। १२ ज्योतिर्लिंगम मेले का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.अमीरचंद, आयुक्त रेणु फुलिया, उद्योगपति पंकज गोयल, ब्र.कु. सुदेश, ब्र.कु. सुधा ब्र.कु. दिनेश।



वलसाड। अलविदा तनाव कार्यक्रम का उद्घाटन के बाद ब्र.कु. रोहित, आरोग्य के अध्यक्ष धर्मा देसाई, अर्चना देसाई, ब्र.कु.रंजन, रशिम, ब्र.कु. पारूल।



अलिंराजपुर। मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. माधुरी बहन।



फैजपुर। महामण्डलेश्वर जनार्दन हरिजी महाराज को सम्मान पत्र देते हुए ब्र.कु. शकुन्ताला साथ में ब्र.कु. मीरा तथा अन्य।



फरीदाबाद। हरियाणा के कैबिनेट मंत्री भूपेंद्र प्रताप सिंह को ओमशांति मिडिया द्वारा सेवाओं की गतिविधि समझाते हुए ब्र.कु. कौशल्या।



मुजफ्फरपुर। कुलपति आर के मित्तल को परमात्मा परिचय की प्रदर्शनी समझते हुए ब्र.कु. पदमा बहन।



वाराणसी-बहरडिहा। रेल्वे कारखाना के प्रबंधक बी.पी. खरे को गुलदस्ता देकर स्वागत करते हुए ब्र.कु. सरोज, ब्र.कु. चंदा।



संगमनेर। एक शाम प्रभु के नाम कार्यक्रम में उपनगराध्यक्ष पुनमताई मुंडडा स्वागत करते हुए ब्र.कु. अनिता तथा ब्र.कु. अविनास।

विचारों का...

- पेज 6 का शेष

है। उसमें पोषणकारी आध्यात्मिक शक्ति का प्रवाह कम हो जाता है और एक निश्चित समयावधि में उस अंग में कोई-न-कोई रोग लग जाता है दूसरी तरफ जो व्यक्ति अधिकतम समय सकारात्मक चिन्तन करता है उसके चारों तरफ का प्रकाश घेरा रजतमय हो जाता है। ऐसे व्यक्ति को सब पसन्द करते हैं और वह सभी सात मूल शक्तियों के प्रकम्पन को चारों तरफ फैलाता है। दूसरे लोग जो उसके सम्पर्क में आते हैं इन शक्तियों को सुखकारी प्रभाव अपने पर भी महसूस करते हैं। सकारात्मक मानसिक शक्ति से मन का शू (सम्बन्ध) खुल जाता है परिणामस्वरूप शरीर के विभिन्न अंगों, विशेषकर पीड़ित अंग के लिए, शक्ति के प्रवाह का अवरोध हट जाता है और बीमारी से शीघ्र मुक्ति हो जाती है।

मन और तन का गहरा सम्बन्ध है। विचार केवल प्रकम्पन ही नहीं हैं, वरन्, वे मस्तिष्क में हाइपोथैलामस में पैदा होने वाले रसायन हैं। अनेक शोध कार्यों के बाद यह सिद्ध हो गया है कि मन के ये विचार रासायनिक तत्व में बदल जाते हैं जिसे न्यूरोपैपटाइड कहा जाता है। इनकी रासायनिक तौर पर पहचान करली गई है। ये न्यूरोपैपटाइड खून के साथ शरीर के हर अवयव तक जाते हैं और प्रत्येक अवयव इन्हें स्वीकार करता है। (शरीर में 50, 70 ट्रीलियन अवयव हैं) ये न्यूरोपैपटाइड मस्तिष्क की तरफ से सन्देशवाहक का कार्य करते हैं और हर अवयव को इनका सन्देश मानना पड़ता है। इस प्रकार न्यूरोपैपटाइड के माध्यम से मस्तिष्क हर अवयवसे बात करता है और ये अवयव भी एक दूसरे से बात करते हैं। मन (सूक्ष्म शरीर) में किस बात के विचार भरे हैं, उनके प्राभव से स्थूल शरीर बच नहीं पाता है। यदि मन में नकारात्मकता है तो हाइपोथैलामस में नकारात्मक न्यूरोपैपटाइड पैदा होते हैं वेशरीर के हर अवयव तक जाते हैं। विशेषकर पीड़ित अंग तक और अनेक प्रकार के तनाव-हारमोन्स का छाव हो जाता है। जैसे अपिनफरीन, नॉरअपिनफरीन, कोर्टिसोल, आदि और सिम्पेथेटिक डोमिनेन्स जो बीमारी का कारण बनते और शक्ति को जला देते हैं। दूसरी तरफ यदि हम सकारात्मक विचार पैदा करते हैं। तो इण्डोरफिन्स, इनसेफालिनस, मेलाटोनिन पारासिम्पेथेटिक डोमिनेन्स पैदा होते हैं जो प्रसन्नता और स्वास्थ्य की ओर ले जाते हैं तथा शक्ति जमा करते हैं।

बुद्धि-निर्णय शक्ति है। राजयोग के अभ्यास से बुद्धि युक्तियुक्त बन जाती है और हम उचित निर्णय लेना सीख जाते हैं। संस्कार - बार - बार किये गये संकल्प, वाणी और कर्म, संस्कार का निर्माण करते हैं। यदि कोई बार-बार क्रोध करता है तो वह क्रोधी बन जाता है और जो बार-बार दान देता है तो वह दानशील कहलाने लगता है इस प्रकार आज हम जो भी कुछ उसकी आधारशिला हमारे विचारों द्वारा ही रखी गई है।

जीवन जीने की सम्पूर्ण विधि

भगवान ने यहाँ बतलाया है कि जीवन जीने की सम्पूर्ण विधि क्या है? उस जीवन जीने के लिए कौन सी चीज़, मनुष्य जीवन में किस प्रकार से होनी चाहिए। भगवान ने सोलहवें और सत्रहवें अध्याय में यह स्पष्ट किया कि सतो, रजो, तमो प्रकृति के ये तीन गुण और उससे मनुष्य आत्मायें किस प्रकार प्रभावित हो जाती हैं। जिस प्रकृति का प्रभाव विशेष होता है, वैसी ही उसकी आंतरिक प्रकृति बनने लगती है और उसी के क्रम में भगवान ने तीन प्रकार के यज्ञ बताए हैं और इनकी विवेचना की है, तीन प्रकार की तपस्या बतायी है, तीन प्रकार के दान बताए और तीन प्रकार के भोजन बताए हैं।

अठारहवें अध्याय के अंदर और आगे के जीवन के अंदर जो विशिष्ट बातें हैं कि तीन प्रकार की बुद्धि, तीन प्रकार का त्याग, तीन प्रकार के सुख, तीन प्रकार की धारणा की शक्ति, तीन प्रकार के कर्म अर्थात् किस प्रकार का जीवन हमें जीना है, ये हमें खुद निश्चित करना होगा। यदि हमें एक सात्विक जीवन जीना है, तो हमारी बुद्धि कैसी होनी चाहिए? हमारी धारणा शक्ति कैसी होनी चाहिए? हमारे कर्म कौन-से होने चाहिए और उससे उपलब्ध सुख किस प्रकार का होता है? इस प्रकार की तीन-तीन बातों को और स्पष्ट किया है। सारांश में जीवन जीने की विधि बतायी है। अठारहवें अध्याय पूरे सत्रह अध्यायों का सार है। सन्यास की परम सिद्धि क्या है, उसको भी स्पष्ट किया है। सन्यास का मतलब ये नहीं कि सब कुछ छोड़ देना, अपने कर्तव्य को छोड़ना, अपनी जिम्मेदारियों को छोड़ना, उसको सन्यास नहीं कहा जाता है।

मनुष्य के अंदर रही हुई आसुरी वृत्तियों का सन्यास, इसकी विशेष प्रेरणा दी है। यहाँ त्याग का अर्थ और मानवीय चेतना तथा कर्म पर प्रकृति के गुणों का प्रभाव समझाते हैं। इस अध्याय में वर्णित संकेत हमारे आंतरिक व्यक्तित्व का बोध कराते हैं कि किस प्रकार के व्यक्तित्व को हमें अपने भीतर

से निर्माण करना है और समय प्रति समय हम इन सूचकों के आधार पर

**गीता ज्ञान का
आध्यात्मिक
बहस्य**

-वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु. उषा



अपने व्यक्तित्व का अवलोकन करें कि ये सात्विक हैं, राजसिक हैं या तामसिक हैं। उसके आधार पर स्वयं का परिवर्तन करें।

श्रीमद्भगवद्गीता की महिमा तथा उसके स्तर का वर्णन इस प्रकार समझते हैं। धर्म का सर्वोच्च मार्ग परमात्मा की शरणागति है अर्थात् स्वयं को समर्पित कर देना अर्थात् स्वयं को समर्पित भाव में ले आना है। जो पूर्ण प्रकाश प्रदान करने वाला है, और मनुष्य आत्मा को वापिस जाने की समर्था प्रदान करता है, कि किस प्रकार की समर्था आत्मा में होनी चाहिए।

इसमें पहले श्लोक से लेकर बारहवें श्लोक तक सन्यास और त्याग का आधार और उनके प्रकार बताये हैं। तेरहवें श्लोक से लेकर सत्रहवें श्लोक तक कर्म की सिद्धि में पाँच कारण बताए हैं। अठारहवें श्लोक से लेकर अद्वादसवें श्लोक तक ज्ञान, कर्म और कर्त्ता गुण भेद के तीन प्रकार बताए हैं। उन्तीसवें श्लोक से पैतीसवें श्लोक तक बुद्धि और धारणा के तीन प्रकार बताए हैं। छत्तीसवें श्लोक से उन्वालीसवें श्लोक तक तीन प्रकार के सुखों का वर्णन किया गया है। चालीसवें श्लोक से लेकर अड़तालिसवें श्लोक तक वर्ण धर्म के स्वभाव जन्म कर्म बताए गए हैं। उन्वासवें श्लोक से लेकर ५४ वें श्लोक तक स्वधर्म युक्त कर्म और ज्ञान की पराकष्टा का आधार बताया गया है। पचपनवें श्लोक से लेकर के छियासठवें श्लोक तक परमात्मा के निर्देश अनुसार कर्म और शरणागति को स्पष्ट किया गया है। सड़सठवें श्लोक से लेकर के तिहत्तरवें श्लोक तक गुह्य गीता ज्ञान का महत्व और उसकी उपलब्धि स्पष्ट की गई है। इस तरह से अठारहवां अध्याय सम्पूर्ण गीता में सबसे बड़े ते बड़ा अध्याय है। जिसके अंदर कुल में ७८ श्लोक हमारे सामने हैं।

भगवान से अर्जुन पूछता है कि सन्यास और त्याग का यथार्थ स्वरूप क्या है? इन दोनों के बीच का अंतर स्पष्ट करने के लिए उसने प्रार्थना की। भगवान कहते हैं - त्याग तीन प्रकार के हैं। यज्ञ, दान और तप। ये कर्म त्याग करने के योग्य नहीं हैं। इसान को त्याग क्या करना चाहिए, किस बात का सन्यास करना चाहिए, ये ज्ञान होना बहुत जरूरी है। जो विशेष जीवन के अंदर उपयोगी चीजें हैं। उसका त्याग करने की बात कही है। यज्ञ, तप और दान ये तीनों कर्म त्याग करने के योग्य नहीं हैं, क्यों? क्योंकि ये मनुष्यों को भी पवित्र करने वाले हैं। नियत कर्म को कर्तव्य समझकर इसमें आसक्ति और फल को त्यागना ये सात्विक त्याग है अर्थात् हर जगह संपूर्ण गीता के अंदर यह बात हमने बार-बार सुनी है कि आसक्ति का त्याग करो। जो फल है वो परछाई की तरह हर कर्म के साथ जुड़ा हुआ ही है। फिर फल को कामना करना या उससे अधिक की कामना करने से, क्या वो प्राप्त हो जायेगा। कर्म हम थोड़ा करें और फल अधिक चाहे, तो क्या ये मिलेगा? अरे, जो परछाई जैसी होगी उसी अनुसार वो प्राप्त होना है। उसकी इच्छा को लेकर के कर्म करना, ये तो यथार्थ नहीं है। इसमें हम अपने विचारों की शक्ति को यूँ ही व्यर्थ गँवा रहे हैं। जिसने जितनी भावना से जैसा कर्म किया, उसका फल वैसी ही उसके साथ जुड़ जाता है। चाहे आप इच्छा करो या न करो। ये जुड़ा हुआ ही है। उससे अधिक इच्छा करने पर वो मिलने वाला नहीं है क्योंकि कर्म का प्रमाण जितने में होगा, उसी अनुसार वो मिलना है। (क्रमशः)

कथा स्रष्टा

बादशाह की मजदूरी

एक बादशाह ने अपना वजीफा तय करने के लिए वजीरों से कहा- मेरी जिदंगी आसानी से चल जाए इसलिए रोज के खजाने से मेरा वजीफा तय कर दिया जाए। बादशाह दीन-ईमान में भरोसा करता था इसलिए वह खजाने से खुद कुछ भी नहीं निकालता था। खजाने को जनता की सम्पत्ति मानता था। वजीरों के सामने बड़ा कठिन संवाला था कि बादशाह का वजीफा कितना तय किया जाए?

बादशाह से ही जाकर पूछ लेंगे। वजीरों ने बादशाह से पूछा-हुजू! हम आपका वजीफा तय नहीं कर पाए। आप ही फैसला करें। बादशाह ने कहा- इसमें परेशानी की क्या बात है? आप तो यह बताइए- राज्य में एक मजदूर को रोज कितनी मजदूरी मिलती है। वजीरों ने कहा- मजदूर को मजदूरी तो बहुत कम है, उससे न तो आपका गुजारा होगा और न ही वह आपके शान के अनुरूप है। शान से मजदूरी को क्या मतलब? मैं मजदूर के

बराबर ही मजदूरी लूंगा।
इससे मुझे यह पता लग जाएगा कि एक मजदूर कैसे अपना जीवनयापन इतने कम पैसों से करता है। अगर मुझे लगेगा कि मजदूरी कम है तो मजदूरी बढ़ाने की कोशिश करूंगा। इससे मेरा वजीफा भी अपने आप बढ़ जाएगा। बादशाह की यह बात सुनकर पूरे दरबार में उसकी सादगी और ईमानदारी की जय-जयकार हुई।

क्रोध इंसान का सबसे बड़ा दुश्मन है। क्रोध एक बार दिमाग पर हावी हो गया तो दीवला निकालकर ही दम लेता है। क्रोध जहां है, वहां दीवली कैसे? वहां तो दीवला तो होगा। हर कोभी को एक दिन क्रोध का क्रोध इंसान का सबसे बड़ा दुश्मन खामियाजा उठाना पड़ता है। इसलिए क्रोध करे भी तो रोज नहीं, सप्ताह में एक दिन। कभी-कभी करोगे तो सामने वाला पर उसका असर भी पड़ेगा। रोज दिन में दस बार क्रोध करोगे तो सामने वाला कहेगा इनकी तो चिल्लाने की आदत पड़ गई है। लोग कहते हैं, वह हाई-टेक का जमाना है मगर मेरा कहना है कि यह हाई-टेक का नहीं एक संन्यासी घूमते-फिरते किसी परचूनी को दुकान पर पहुंच गए। दुकान में अनेक छोटे-बड़े डिब्बे पड़े थे। एक डिब्बे को और इशारा करते हुए संन्यासी ने दुकानदार से पूछा-इसमें क्या है? दुकानदार-इसमें नमक है। संन्यासी-इसके पास वाले में क्या है?दुकानदार- इसमें हल्दी है। संन्यासी-इसके बाद वाले में?दुकानदार-जोरा है। संन्यासी-आगे वाले में?दुकानदार-उसमें हींग है इस प्रकार संन्यासी घुंठते गए और दुकानदार बतलाता रहा-

क्रोध इंसान का सबसे बड़ा दुश्मन

बल्कि हाई-जेक को जमाना है, हम ऊपरी तौर पर सुविधा सम्पन्न जन्मकर हुए हैं पर इन सुविधाओं ने हमारे संस्कार, सभ्यता और संस्कृति का अपहरण कर लिया है। रेडीमेड की आदत ने आदमी को निकम्मा बना दिया। हर दिन, हर सुबह एक नया जीवन है। इसलिए एक जीवन की शुरुआत पुराने मन से मत करो। नए जीवन के साथ मन भी नया होना चाहिए। हो सकता है रातभर में तुम्हारा दुश्मन मित्र बन गया

हो और मित्र दुश्मन। इसलिए जब सुबह किसी से मिलो तो एकदम अजनबी की तरह मिलो। कोई अपनी पूर्व-धारणा लेकर मत मिलो। दुर्जन और सज्जन दोनों इंसाने हैं। फर्कसिर्फ इतना है कि सज्जन जब रहता है तब इंसाना है और दुर्जन जब जाता है तब इंसाना है। दुर्जन का साथ किसी भी हलात से अच्छा नहीं। कौन्सा हर हाल में खुश है। जलता हुआ हो तो हाथ जला देता है और ठंडा होतो हाथ काले कर देता है। दुःख क्या है बुरी संगति ही दुःख है। इसलिए कभी ही संगति कीजिए साथुकी, कटे कोटि अपराध।

ईश्वर का वास

उसमें धनिया, उसमें मिर्च, उसमें राई आदि आदि। आखिर पीछे रखे डिब्बे का नम्बर आया। संन्यासी ने पूछा- उस अंतिम डिब्बे में क्या है। दुकानदार ने कहा-उसमें राम-राम है। संन्यासी चौंक पड़े यह राम-राम किस वस्तु का नाम है। दुकानदार ने कहा- महात्मन्! और डिब्बों में तो भिन्न-भिन्न वस्तुएं डाली हुई हैं पर यह डिब्बा खाली है। हम खली को

खाली नहीं कहते हैं, इसमें राम-राम है। संन्यासी की आंखें खुल गईं, खाली में राम-राम! ओह! तो खली में राम-राम रहता है, भरे हुए में राम को स्थान कहा? लोभ, लालच, ईर्ष्या, द्वेष और भली-बुरी बातों से जब तक दिल-दिमाग भरा रहेगा, उसमें राम यानी ईश्वर तो साफ-सुथरे मन में ही निवास करता है। दुकानदारकी बात से संन्यासी के ज्ञान चूख छुल गए।

डॉनजोन्स नाम का एक अंग्रेज युवक परिवार के भरण-पोषण के लिए होटल में रात को चौकीदारी करता और वहां एक कमरे में रहता। एक रात मूसलाधार बारिश हो रही थी। तभी एक दम्पती भीगे हुए वहां आए और कमरे की मांग करने लगी।

बरसात की रात

दयालु जोन्स संकोच में पड़ गया और बोला- आप चाहें तो रात में मेरे कमरे में रह सकते हैं, पर वह बिलकुल साधारण है। वे बोले-फिर तुम कहाँ सोओगे? जोन्स ने उत्तर दिया-आप चिन्ता न करें। मैं तो इस कुर्सी पर बैठकर ही समय गुजार लूंगा। दम्पती ने राहत की सांस ली। दोनों कमरे में ठहर

गए। इस घटना के ठीक एक साल बाद जोन्स को एक लिफाफा मिला, जिसमें उसके लिए न्यूयार्क का एक टिकट एवं पता था। जोन्स उस पते पर न्यूयार्क पहुंचा। उसने देखा कि उस दम्पती ने वहां एक बहुत ही सुंदर होटल बनाया है। उन्होंने जोन्स की बड़ी आभ्युत्थान की और कहा-आज से हम तुम्हें इस होटल का मैनेजर बनाते हैं। जोन्स बोला-मुझमें इतनी योग्यता मानवता है, वह तुममें है। इस हमने बरसात की उस रात को महसूस किया था।

डॉनजोन्स ने कहा-होटल में एक भी कमरा खली नहीं है। कृपया माफ करें। दम्पती ने कहा-हम कहाँ जाएंगे, कुछ समझ में नहीं आ रहा।

नदी की सीख

उसका उपयोग करते हैं। तुम्हारी संग्रह-प्रवृत्ति के कारण ही तुम्हारे पानी को लोग गडबड़े का मटमैला पानी कहते हैं, उसे कोई निर्मल जल नहीं कहता। मेरे जल में लोग स्नान भी करते हैं और उसे पीते भी हैं। यही नहीं, मेरी पूजा भी करते हैं। मेरे जल से देवताओं का अभिषेक किया जाता है। इतना ही नहीं, मेरे जल से खेतों में अन्न

पैदा होता है। छोटे मुंह बड़ी बात कहकर तुम मेरी सतत् सेवा को मूर्खता बताते हो? जो आनन्द मुझे देने में आता है, वह मुझे अपने पास रखने में नहीं आता।
अभी वर्षा ऋतु है इसलिए तू सजल है। कुछ दिन बाद देखना मनुष्य तो क्या, जंगली जानवर भी तेरी ओर देखना पसंद नहीं करेगा। नदी की बात सुनकर गड्डा चुप हो गया।

नदी के तट पर बने गडबड़े ने एक दिन नदी से कहा-बहिना! तुम कैसे मूर्ख हो जो रात-दिन बहती रहती हो और अपना सारा पानी सागर की ओर बहा देती हो। मुझे देखो, मैं शांत होकर एक स्थान पर स्थिर रहता हूँ। नदी ने कहा-भाई! मूर्ख तुम हो या मैं, इसका निर्णय तुम नहीं कर सकते। जिनमें स्वयं देने की इच्छा नहीं होती, उनसे छीन लिया जाता है। तुम्हारा जल सूर्य अपनी किरणों से खींचकर सोख लेता है। तुम्हारे मैले पानी को कोई मनुष्य पीना पसंद नहीं करता, मात्र कुत्ते-सुअर



कोल्हापुर। विधायक नलीनी गोरह भगीनी अवाई से नवाजे हुए साथ में विधायक राजेश खोरसागर, ब्र.कु.वैशाली, ब्र.कु.धनंजय महादीक अन्य।



पीरा रोड। ब्र.कु.सुबा समारंभ में मूल्य शिक्षा पर बच्चों को संबोधित करते हुए।



मुलुन्द। मेले में आये प्रसिद्ध कलाकार रमेशदेव से आध्यात्मिक चर्चा करते ब्र.कु. गोदावरी साथ में डॉ.राजकुमार कोल्हे व अनुराग आचार्य।



पंढरपुर। तीन दिवसीय योग भूठी का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलन कर करते हुए शिवदास महाराज, ब्र.कु. सोमप्रभा, ब्र.कु. आत्मप्रकाश, ब्र.कु. उज्ज्वला, ब्र.कु. प्रताप, ब्र.कु.वैशाली।



सीतारंगज। कांग्रेस के सेक्रेटरी शिवकुमार मीतल को ईश्वरीय सीतारंग देते हुए ब्र.कु. पार्वती तथा अन्य।



दिगावा मण्डी। शिव संदेश अभियान कार्यक्रम के दौरान संबोधित करते हुए जिला अध्यक्ष बहादुर चंद्र शर्मा साथ में संजय मृगला तथा ब्र.कु. शंकुतला।



देहरा, हि.प्र.। गवर्मेन्ट महाविद्यालय हरिपुर में नेशनल सर्विस स्कीम के विद्यार्थियों को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ग्रुप फोटो में बी.के.कमलेशा बहन, बी.के. पूर्ण भाई एवं कॉलेज के प्राचार्यगण।

आपकी खुशी आपके पास



क्या आप अशांत हैं, क्या आप अवसाद के दौर से गुजर रहे हैं, क्या आपके मिजाज को क्रोध ने वश कर लिया है, क्या आप तनाव से ग्रस्त हैं। क्या आपने कभी सोचा है मन की शांति के लिए रिमोट कंट्रोल आपके पास है। देखिए नॉन स्टॉप, बिना किसी विश्राम के, आध्यात्मिकता के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करता हुआ 'पीस ऑफ माइंड चैनल, आपके शहर में उपलब्ध है।

ब्रह्माकुमारीज टांसपोर्ट विंग (शिपिंग एविएशन टूरिज्म) द्वारा 'रिडिफाइनिंग हैपीनेस, विषय पर सेमिनार का आयोजन ज्ञानसरोवर परिसर में 26 जुलाई से 30 जुलाई 2013 तक आयोजित किया जा रहा है। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - ब.कु.मोरा, राष्ट्रीय संयोजिका

Email - satservicestw@gmail.com
Mob.-9920142744,
9413384864

सूचना- ओमशान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने वाले भाइयों की आवश्यकता है। ईमेल, वेबसाइट तथा साफ्टवेयर की जानकारी रखने वाले भाई की भी आवश्यकता है। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें -

E-mail-
mediabkm@gmail.com,
Mob.-8107119445



सूचना

आप सभी भाई-बहनों की मांग पर राजयोग प्रवचन माला की पुस्तक 'राजयोग मेडिटेशन' नवीन संस्करण के साथ, भगवान कौन? की गीता का आध्यात्मिक रहस्य पुस्तक, हैपीनेस इंडेक्स, कथा साहित्य उपलब्ध है। इसे आप ओम शान्ति मीडिया, शांतिवन कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

दुष्ट-जनों का संग दुखदायी



(स्वामी चक्रपाणि)

वेदों में स्पष्ट निर्देश है कि पापलित प्रवृत्तियों को धर्मनिष्ठ बनाने का प्रयास लगातार करते रहो, लेकिन उनसे ऐसे सम्बन्ध भी मत रखो जो आपको विचित्रता नष्ट हो जाये। इस प्रसंग में हितोपदेश की एक कथा बहुत प्रसिद्ध है। एक व्यापारी उज्जयिनी तीर्थ की यात्रा पर जा रहा था। वह भगवान महाकालेश्वर के दर्शन करना चाहता था। यात्रा लम्बी थी। मार्ग में एक विशाल वट वृक्ष मिला। यात्री ने सोचा कि इस वृक्ष के नीचे विश्राम कर लिया जाय।

श्रीमत् ऋतु अपनी प्रचण्डता पर थी। जब यात्री वृक्ष के नीचे लेटा और उसे नींद आ गयी। कुछ देर पश्चात वृक्ष के पत्तों के मध्य से गर्म धूप उसके ऊपर गिरने लगी। उस वृक्ष पर अनेक पक्षी रहते थे। एक हंस भी वहाँ निवास करता था। वह अत्यंत साधु और सज्जन स्वभाव का था। उसे लगा कि यात्री को नींद न टूट जाये। इसलिये वह वृक्ष की एक शाखा पर बैठकर अपने पंख फैलाकर छाया करने लगा। जब कौए ने देखा कि हंस सज्जनता का कार्य कर रहा है तो उसने विघ्न डालने की योजना बनायी। वह सेवाभाव करते हुए हंस के पास आकर बैठ गया। हंस ने भी आदर के

साथ कौए को अपने पास बैठा लिया। लेकिन कौआ हंस को कष्ट देना चाहता था। अतः उसने सोचा कि यदि मैं यात्री के मुख पर बीट कर देता हूँ तो वह नाराज हो जायेगा और सोचेगा कि हंस ने ही बीट की है। वह हंस को अपने तीर-बाण से मार देगा और मैं उससे पहले ही उड़ जाऊँगा। अपनी इस योजना के अनुसार कौए ने यात्री के मुख पर बीट कर दी। यात्री की आँख खुल गयी और उसने सोचा कि हंस ने ही बीट की है। कौआ पहले ही उड़ चुका था। क्रोधित यात्री ने अपने बाण से हंस की हत्या कर दी और दूर बैठा कौआ मन ही मन प्रसन्न हो रहा था। कौआ स्वयं तो अच्छे आचरण को ग्रहण कर सम्मान प्राप्त करने की इच्छा नहीं रखता था लेकिन वह हंस से ईर्ष्या करता था कि यह सबके लिये आदर का पात्र क्यों है ?

यजुर्वेद में ऋषि प्रार्थना करते हैं कि हे संसार के उत्पादक देव! आप हमारे सारे दुर्गुणों एवं हमसे दुर्जनों को दूर रखिये तथा हमारे लिये जो कल्याणकारी गुण हों, उन्हें हमें दीजियेगा। आचार्य चाणक्य कहते हैं कि स्वयं भी अच्छे आचरण को ग्रहण करें साथ कपटी से सावधान रहते हुए उसकी कुटिल चालों को विफल

करें। अथर्ववेद में कौआ जैसी प्रवृत्ति वाले लोगों को आस्तीन का सांप कहा गया है। ऋषि कहते हैं कि यहाँ जो पास में दूरी पर आस्तीन के साँप हैं, वे सारहीन हो जायें। मैं बिच्छू को हथोड़े से मारता हूँ और पास आये सर्प को लाठी से मारता हूँ। ऋषि आह्वान करते हैं कि समाज को सुरक्षा देने के लिए दुर्जन का दमन करो और उनका त्याग ककरो, इसलिए साधक प्रार्थना करता है कि हे प्रभो! शत्रु जनों का अनिष्ट चिंतन और कष्ट व्यवहार हमारे पास तक न आये। हे ईश्वर हमें अच्छी प्रेरणाये देकर हमारी रक्षा करें और हम दुर्जनों की कुटिल नीतियों से सदैव सावधान रहें।

भारतीय चिंतन में उन लोगों को ही राक्षस, असुर या दैत्य कहा गया है जो समाज को शान्तिमय जीवन जीने का अवसर प्रदान नहीं करते। दानवी प्रवृत्ति स्वपोषण की प्रवृत्ति है। वेद कहते हैं कि विश्व को आर्य बनाओ अर्थात् श्रेष्ठ बनाओ। श्रेष्ठता तब ही आयेगी जब कुटिल और असत्य चालों से मानवता की रक्षा की जायेगी।

प्रश्न- आजकल भारत में कई लोग विभिन्न नामों ने योग सिखा रहे हैं। अनेक पार्टियाँ निकली हैं। कोई रामपार्टी कोई विष्णु पार्टी तो कोई शंकर पार्टी। हमें भ्रम सा होता है कि सत्य कहाँ है, हम कहाँ जाएँ ?

उत्तर- जाएँ तो आप वहीं जहाँ जाने की इच्छा हो। परन्तु भगवान को पाकर व सत्य ज्ञान को पाकर भटकना उचित नहीं। यह दुर्भाग्य की निशानी है। जिसे भगवान के पास सन्तुष्टी नहीं मिली उसे अन्यत्र कहीं भी नहीं मिलेगी। कुछ लोग भटक रहे हैं अपने अहं के कारण। कुछ लोग भटक रहे हैं अपने भटकने के संस्कारों के कारण व कुछ भटक रहे हैं आन्तरिक असन्तोष के कारण। आपको भी भटकने की इच्छा हो तो भटक कर देख लो। अनेक जन्मों की भक्ति व खोज के बाद तो भगवान मिले। कई लोग उसे भी छोड़ने की तैयारी में हैं। जिन्हें प्रभु-मिलन से सन्तोष नहीं हुआ उन्हें भला अन्यत्र क्या मिलेगा। सत्य तो वहाँ है जहाँ पवित्रता है। केवल नाम मानव अपनी पहचान के लिए नई पार्टी बना लेने से तो सत्य के सूर्य को ठका जा सकता और न किसी का कल्याण ही हो सकता। अनेक लोग इधर-उधर भटक कर पुनः वापिस आ गये हैं। अब उनमें वैसा उमंग उत्साह ही नहीं रहा। इसलिए आप भ्रमित न हों। ज्ञान योग में दक्षता हासिल करो, सत्य का आभास हो जायेगा।

प्रश्न- मेरा चित्त चैन नहीं पा रहा है। पता नहीं अचानक क्या हो गया। मरी अवस्था 10 वर्ष से बहुत ही सुन्दर रही। कुछ ही दिन में जीवन में उदासी व एकाकी पन छा गया। क्या करूँ मेरी कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है। मुझे इससे जंजाल से निकलने का मार्ग चाहिए।

उत्तर- यह स्थिति अब बहुतों को हो रही है। इसका प्रमुख कारण है जन्म-जन्म के विकर्म। न जाने किसने कितने पाप किये थे। वे सब अचेतन मन में अंकित हैं अब उनसे अति घातक तरंगे मस्तिक में जा रही हैं। किसी पर उदासी छा रही है, किसी को अचानक अदृश्य व अकारण भय सता रहा है तो कोई अनिद्रा का शिकार हो गया है तो कोई मनोरोगी बन गया है। इसका इलाज डाक्टरों के पास बिल्कुल नहीं है। क्योंकि मन के लिए कोई भी दवाई होती नहीं, दवाईयाँ मस्तिक के लिए होती हैं। अब से ही प्रतिदिन 100 बार लिखो कि मैं एक महानत्मा हूँ। सबेरे जल्दी उठकर कुछ अच्छी क्लासे सुनो या अव्यक्त महावाक्य पढ़ें। थोड़ा सा एकान्त में

शिव बाबा से रूह रिहान करें। मन पसन्द गीत सुनें और यदि समय हो तो अकेले में गीत गाकर नृत्य भी कर लें। 3 दिन में आपको वित्त पुनः शान्त हो जायेगा।

मन में यदि कोई भी चिन्ता हो तो परेशान न हों। हर बात का हल आपके पास है। जीवन में हार-जीत सुख-दुःख, मान-अपमान आते ही हैं, उन्हें हल्के में लेकर पुनः 5 स्वरूपों का सारे दिन में 16 बार अभ्यास करो व 2 घण्टा प्रति दिन राजयोग का अभ्यास करो। प्रश्न- मेरी खुशी गुम हो गई है। मुझे लोग बहुत बुरा भला कहते हैं। किसी का भी बुरा नहीं करती, फिर भी मुझे चारों ओर से बुराई ही मिलती है। मुझे सब नष्ट कर देना चाहते हैं, मैं क्या करूँ ?

उत्तर- लोग तो आपको नष्ट कर देना चाहते हैं, परन्तु इससे पहले ही आपने अपनी धार्मिक स्थितियाँ स्थापित गड़ जाती हैं।

भगवानुवाच याद करो। स्वमान से श्रेष्ठ। स्थिति बनती है व श्रेष्ठ स्थिति से परिस्थितियाँ स्वतः ही ठीक हो जाती हैं। स्वमान में स्वयं को ले चलो। मैं वही इष्ट देवी हूँ जिसकी मन्दिरों में पूजा हो रही है, मैं तो शिव-शक्ति हूँ। इस चिन्तन में मस्त हो जाओ। इससे आपकी स्थिति श्रेष्ठ रहेगी। जितने ध्यान से मनुष्यों के शब्द सुनती हो, उतना ही ध्यान यदि भगवान के शब्दों पर दो तो कमाल हो जाए।

सोच लो- भगवान ने कहा है कि तुम्हें सदा खुश रहना है। मुझे तो भगवान की सुननी है, मनुष्यों के बुरे वचन नहीं। इस जीवन में क्या-क्या मिला जरा गहनता से याद करो। घर बैठे भगवान मिले, ज्ञान सागर से ही सम्पूर्ण ज्ञान मिला। स्वर्ग का वर्षा जन्म सिद्ध अधिकार हो गया। भगवान से डायरेक्ट पालना मिली। परमात्म-सुख मिला, सर्व अविनाशी खजाने मिले। सोचो कहीं ये महान प्राप्तियाँ और कहीं मूल्यहीन बातें। अपने स्वमान को बढाओ तो आप पर बातों का असर नहीं होगा। परन्तु याद रहे स्वयं को व्यर्थ बातों से मुक्त रखना होगा तब सदा खुश रहेगी।

प्रश्न- मेरा प्रश्न है कि भगवान ने ये दुःखों की दुनिया क्यों बनाई। सुना है उसने यह दुनिया रची और खुद

बैठकर खेल देखता है। दुःख बहुत बढ़ता जा रहा है। जिससे बात करो वहाँ अपनी दुःख भरी कहानी कहता है आखिर भगवान क्या कर रहा है। वह हमारा परमपिता है, क्या वह अपनी सन्तान को दुःखी देखकर सुख से सोता है ?

उत्तर- सच तो यह है कि भगवान ने तो स्वर्ग (सत्युग) रचा था जहाँ सभी मनुष्य देवता थे। सुख से भरपूर थे। इतना सुख था कि वहाँ कि डिवसन्तरी में दुःख शब्द ही नहीं था। मनोविकारों से मुक्त, रोग, शोक, आदि का वहाँ नाम-निशान नहीं था। इसलिए वह दुनिया निर्वािकारी, पूर्ण अहिंसक व देव-सभ्यता वाली स्वर्ग थी। परन्तु यह दुःखी दुनिया मनुष्य ने अपने मनोविकारों से व अपने पाप-कर्मों से स्वयं बनाई।

आज भी कुछ लोग बहुत सुखी हैं। सत्य तो यह है कि सुख-दुःख प्रभु देन नहीं, बल्कि मनुष्यों के कर्मों का ही फल है। पुण्य से सुख होता है व पाप दुःखों का कारण है। जो मनुष्य व्यर्थ संकल्पों में ज्यादा रहता है वह, सुखी नहीं रहता और जो दूसरों को दुःख देता है वह तो दुःखी रहेगा ही।

क्योंकि मनुष्य जो कुछ पा रहा है, अपने कर्मों के ही कारण। इसलिए भगवान इस विश्व के खेल को साक्षी होकर देखता है। हाँ वह उन्हें अवश्य मदद करता है जो उस पर विश्वास करते हैं व अपने चित्त को पवित्र रखते हैं। भगवान हमारा परमपिता है वह रहम दिल भी है, प्यार का सागर भी है इसलिए अपनी सन्तानों को दुःखी देखकर वह सदा ही साक्षी तो नहीं रहता बल्कि उन्हें सत्य ज्ञान देने के लिए इस धरा पर अवतरित होता है। अब उसके दिव्य कर्म करने का समय चल रहा है। वह परम-पिता, परम शिक्षक बनकर सत्य ज्ञान दे रहे है, कर्मों की गड्ड गति का राज भी समझा रहे है व मनुष्यों को पावन व सदा सुखी होने का मार्ग भी दिखा रहे हैं। वे ऐसा श्रेष्ठ राजयोग सिखा रहे हैं जिससे वे विकर्म व मनोविकार नष्ट हो जाते हैं जिनके कारण मनुष्य दुःखी हुआ है।

अनेक लोग इस राजयोग के माध्यम से सुखी हो गये हैं, उनकी दुःखों की कहानी समाप्त हो गई है। आप सभी को कह सकती हो कि कुछ ही वर्षों में ये पाप व पापियों की दुनिया नष्ट होगी और धरा पर देव युग आ जाएँगा। उससे पूर्व परमात्म-मिलन से सर्व दुःखों का अन्त किया जा सकता है।



बि

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

पथम सप्ताह

स्वमान - मैं बाप समान संतुष्टमणि हूँ।

- संतुष्टमणि का प्रकाश सारे विश्व में फैलता है। जहाँ संतुष्टता है, वहाँ सर्व शक्तियाँ स्वतः चली आती हैं। संतुष्ट आत्मा सर्व को और बाप को अति प्रिय लगती है। जरा सोचें, भगवान को पाकर भी यदि हम संतुष्ट नहीं हुए तो आखिर कब होंगे ?

2. योगाभ्यास - (अ) बाबा से बातें करना कि बाबा, आपको पाकर हम पूरी तरह संतुष्ट हुए आप मिले तो हमें सारा संसार मिल गया हम दिल से यह गीत गाते रहें कि तुम्हें पाकर हमने जहाँ पा लिया है, जमीन तो जमीन आसपास पा लिया है।

(ब) बाबा के स्वरूप पर हम अपनी बुद्धि को लंबा समय एकाग्र करें परमधाम जाकर बाबा को टच करें और वापस अपने देह में प्रवेश करें बार-बार यह खेल ड्रिल करें।

3. धारणा - संतुष्टता - संतुष्टता में ही सच्चा सुख है। हम सेवाओं में भी संतुष्ट रहें और स्व-पुरुषार्थ में भी। संतुष्ट रहने से ही स्थिति एकाग्रचित होती है। मन कुछ पाने के लिए इधर-उधर भटकता नहीं।

4. चिन्तन - संतुष्टता क्या है? - इच्छा और आवश्यकता में क्या अंतर है? - असंतुष्टता कहाँ-कहाँ आती है? - सदा संतुष्ट कैसे रहें? - संतुष्टता के संबंध में बाबा के महावाक्य।

5. तपस्वियों प्रति - प्रिय तपस्वियों जो कुछ हमारे पास है, उसमें पूर्ण संतुष्ट रहकर निरंतर आगे बढ़ते रहें। यदि ऐसा करेंगे तो जीवन में संपूर्ण सुख रहेगा और शांति रहेगी। हमारे पास बहुत कुछ हो परंतु संतुष्टता ना हो तो जीवन में आनन्द नहीं आता। संतुष्टता के लिए अपनी इच्छाओं और कामनाओं को कम करते चले और ईश्वरीय खजानों से स्वयं को भरपूर करें। जो कुछ हमने 84 जन्मों में खोया है, उसे पाकर ही आत्मा संपूर्ण संतुष्ट हो सकती है। इसलिए बाबा से सब कुछ स्वयं में भरते चलो। हमारी संपूर्ण संतुष्टता ही संपूर्णता को समीप लायेगी।

दूसरा सप्ताह

स्वमान - मैं संसार की सबसे खुशानसीब आत्मा हूँ।

चारों युगों में मेरे जैसा खुशानसीब, मेरे जैसा भाग्यवान और कोई नहीं मुझे स्वयं भगवान मिले उन्होंने मेरे श्रेष्ठ भाग्य के द्वार खोले मैं ही यदि खुश नहीं होऊँगा तो भला और कौन होगा?

2. योगाभ्यास - अर्थात् स्वरूपों का अभ्यास करें अपने देव स्वरूप को याद करके आनंद विभोर हो जाएँ बाबा मुझे स्वर्ग की बादशाही देने आए हैं, इस स्मृति से अति प्रसन्न रहें मेरा जीवन प्रभु पालना में पल रहा है अपने इस महान भाग्य को याद करके खुशी में डूबें। व. बाबा हजार भुजाओं सहित मेरे साथ है उनको हजार भुजाओं की छत्रछाया मेरे सिर पर है।

3. धारणा - खुश रहना और खुशी बाँटना

- मेरी खुशी बहुत मूल्यवान है और जीवन में आने वाली बातें मूल्यहीन हैं। संसार की कोई भी बात मेरी खुशी को नष्ट नहीं कर सकती। बातें तो आयेंगी और चली जाएँगी लेकिन मुझे अपनी खुशी को खोना नहीं है।

- सारे दिन में जो भी आपके संबंध-संपर्क में आएँ, उन्हें प्रोत्साहन व महिमा के दो वचन बोलकर खुशी अवश्य दें। अपने को ऐसी अलौकिक प्रसन्नता से भरपूर रखें कि आपको देखकर दूसरों भी प्रसन्न हो जाएँ।

4. चिन्तन - बाबा हमें सदा खुश क्यों देखना चाहते हैं? - खुशी क्यों गुम हो जाती है? - कौन रह सकते हैं सदा खुश? - खुशी के लिये बाबा के महावाक्य।

5. तपस्वियों प्रति - प्रिय तपस्वियों! आओ, हम सभी संसार में खुशी की लहर फैलायें। अपने खुशी के महत्व को समझते हुए छोटी-छोटी बातों के प्रभाव से मुक्त रहकर मन को सदा खुशी से भरपूर रखें। ज्ञान चिन्तन करते रहें कि बाबा मुझे सदा खुश देखना चाहते हैं इसलिए मुझे अपनी खुशी का आधार विनाशी वस्तुओं, वैभवाँ वाय्वक्तियों को नहीं बनना है। अपनी ईश्वरीय प्राप्तियों को याद करते हुए अपने को ऐसी अलौकिक खुशी में रखना है कि मेरी खुशी औरों के मुद्दामें हुए चेहरों पर भी खुशी ले आए। मेरा खुशानुमा चेहरा परमात्म-प्रत्यक्षता का आधार बन जाए।



फतेहपुर-अरबपुर। नवनिर्मित सेवाकेन्द्र का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी साथ में ब.कु. नीरू ब.कु. राधा तथा अन्य।



नरेला। व्यापार मंडल के अध्यक्ष कृष्ण कुमार बंसल का स्वागत करते हुए शक्ति एवं ब.कु. गीता।



मोहली। सर्वधर्म सम्मेलन में फादर सेबास्टियन बास्को, इमाम जनाब जुबीर अहमद, एचएस मन, हरीश मोंगा, ब.कु. प्रेमलता, ब.कु. रमा तथा अन्य।



सफीदो (हरियाणा)। एसडीएम उमदे सिंह मोहन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. स्नेह।



बाजवा-वडोदरा। परमात्म शक्ति द्वारा स्वर्णिम संसार कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब.कु. डॉ. निरंजना, जयाबेन ठक्कर, सरपंच योगशाभाई, अमित भाई, ब.कु. नरेन्द्र तथा अन्य।



दाहोद। महिला कार्यक्रम को दीप प्रज्ज्वलन कर उद्घाटन करते हुए आई पी डी एस पारूल बा, ब.कु. सुरेखा, रंजन बेन, अश्विनी नारी सरंक्षण, एडवोकेट ललीता, डॉ. अनु शाह, ब.कु. कपीला।

तपस्या-जो पेज 3 का शेष

अधिकारी बनेंगे उन्हें सभी की सहमति चाहिए। यह सहमति आजकल की चुनाव प्रणाली वाली नहीं वरन् सूक्ष्म सहमति है। ऐसी महान् आत्माओं को तो सच्चे मन से अपना राजा स्वीकार करेंगे। यदि यह योग्यता नहीं है तो राज्य-अधिकारी बनना सम्भव नहीं चाहे उन्होंने कितनी ही सेवा क्यों न की हो ?

इसलिए एक योगी को सबके दिलों पर राज्य करना होता है, सभी उसे सच्चे मन से सम्मान देते हैं। उसकी महानताओं के आगे सभी मन से झुकते हैं। सभी उसे सहज भाव से सहयोग देते हैं क्योंकि उसका सूक्ष्म सहयोग सभी को प्राप्त होता है। राजा सम्पूर्ण चरित्रवान होना चाहिए। चरित्रवान राजा के राज्य में आपदाएँ नहीं आती। प्रकृति भी उसका सत्कार करती है। प्राचीनकाल में यह मान्यता थी कि राज्य में जो भी पाप-पुण्य होता है उसका 10 प्रतिशत राजा को मिलता है, राजा यदि पापी बन है तो राज्य में विपदाएँ आने लगती हैं। बड़ा सूक्ष्म सम्बन्ध है राजा और प्रजा का। राजा यदि विलासी है तो प्रजा में विलासता शीघ्र ही फैल जाती है। साधना के पथ पर चलकर हम श्रेष्ठ चरित्र का निर्माण करते हैं। विषय-वासनाओं के त्याग के साथ - साथ श्रेष्ठ विचार, शुभभावनाएँ सुखदाई वृत्ति, स्नेह की भावना आदि - आदि श्रेष्ठ चरित्र के मुख्य पहलू हैं।

योग-तपस्या से दिनोदिन इन धारणाओं में विकास होता रहता है। राज्य -अधिकारी सम्पूर्ण शक्तिशाली भी होना चाहिए। विवेक के अभाव में राजा अपनी शक्तियों का दुरुपयोग करके दूसरों के प्रति कष्ट व अन्याय का कारण बन सकता है। इससे चारों ओर अराजकता फैल सकती है। ईश्वरीय ज्ञान व राजयोग में सम्पूर्ण कुशलता प्राप्त करके ही आत्मा विवेकवान बनती है। इसी प्रकार राजा जब शक्तिशाली है तो सभी उसके आदेशों का पालन करते हैं।

राज्य- अधिकारी बनने वाले को स्वयं में त्याग व सादगी का तेज भरना चाहिए। जिन्होंने यहाँ पुरोहित संगमयुग पर स्वयं को त्याग से विभूषित नहीं किया, द्वारपरुग मे राज्य मिलने पर वे सहज ही धन-सम्पत्ति व साधनों के अधीन होकर भोगी - विलासी बन जायेंगे और इस तरह राज्यवंश नष्ट होते रहेंगे। साहस, धैर्यता, निर्भीकता, शीलानता और गम्भीरता जैसे गुण राज्य-अधिकारियों की शान है। जो व्यक्ति अधिकार पाकर अपने कर्तव्य को भूलते नहीं वही भविष्य में राज्य पाकर अपनी प्रजा की पालना के कर्तव्य से उपयुक्त नहीं होते। हम इस समय साधना से जन्म-जन्म के लिए अपने अन्दर महानताओं के बीज डाल रहे हैं। कैसे बीज

स्वयं में डालें - यह स्वयं पर निर्भर है।

राज्य तो सतयुग का भी मिलेगा व त्रेतायुग का भी, दोनों ही विश्व महारजन भी कहलायेंगे। परन्तु एक ने ईश्वरीय शक्तियों से स्वयं को सम्पन्न किया है। तो दूसरे ने अत्याधिक सेवा की है। एक ने सत्प्रधान स्थिति को प्राप्त किया है तो दूसरा केवल सत्तो तक ही जाकर रूक गया। एक ने योग की साधना ज्यादा की तो दूसरे ने ज्ञान ज्यादा। एक ने वारिस तैयार किये तो दूसरे ने प्रजा। जो राज्य-अधिकारी अन्त तक जिस स्थिति तक पहुँचा उसे उसी समय का राज्य-अधिकार प्राप्त होगा जब प्रकृति की स्थिति उसके समान होगी।

तो हे राज्य- अधिकारी बनने के इच्छुक साधको स्वराज्य अधिकारी बनकर यहाँ पर सम्पूर्ण ईश्वरीय सुख प्राप्त करो। स्वयं पर संयम कायम करने वाला योगी ही सम्पूर्ण शक्तिशाली है। परन्तु वो व्यक्ति जो सुख-सुविधाओं के बिना सेवा की साधना नहीं करता, राज्य-अधिकार प्राप्त नहीं कर सकता, क्योंकि वह यहाँ इन्द्रियों का गुलाम है और गुलाम वंश स्वर्ग का राज्य-अधिकारी नहीं बन सकता। अतः इस महान पद के दावेदार बनने के लिए त्याग-तपस्या -सेवा और सादगी का जीवन बनाओ।

परिवर्तन के लिए विचारों को बदलें



भिलाई | लीडिंग विद विसडम कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन के पश्चात्, भारत भूषण, डॉ. के.आर. कार्तिकेयन, ब्र.कु. ओम्प्रकाश, ब्र.कु. मोहन सिंघल, एस. चंद्रसेकरन, ब्र.कु. आशा, एस.बी.जगदाले।

भिलाई | क्लायेडम ब्र.कु. भारत, ब्र.कु. कमलादीदी, का उद्घाटन दीप प्रज्वलन भारत भरतों हुए डॉ.आर.कार्तिकेयन, न्यायमूर्ति लालचंद भादु, छत्तीसगढ़ सेवा आयोग के अध्यक्ष प्रदीप जोशी ब्र.कु. ओम्प्रकाश तथा अन्य।

भिलाई | प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय सेक्टर सात के पीस ऑडिटोरियम में लीडिंग विद विजडम विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के कार्यक्रम में मुख्य वक्ता सी बी आई के पूर्व निदेशक डी आर कार्तिकेयन शामिल हुए। प्रशासकों व प्रबंधकों के लिए हुए इस राष्ट्रीय सम्मेलन में वक्ताओं ने आध्यात्मिकता व प्रशासन के संबंधों को विस्तार से बताया। इस राष्ट्रीय सम्मेलन में वैज्ञानिक एवं अभियंता प्रभाग माउंट

आबू से राष्ट्रीय संयोजक मोहन सिंघल, मुंबई से मैनेजमेंट ट्रेनर प्रो. ईवो स्वामीनाथन, पानीपत से भारत भूषण व बीएसपी के सीईओ एस चंद्रसेकरन ने व्याख्यान दिए। इस मौके पर सीबीआई के डी आर कार्तिकेयन ने कहा कि किसी भी क्षेत्र में यदि परिवर्तन लाना है तो सबसे पहले अपने विचारों को बदलना जरूरी है।

दूसरों का भला सोचें
कार्तिकेयन ने कहा कि अगर हम समस्याओं को समाप्त करना चाहते हैं तो हमें दूसरों के भले के लिए कुछ करना होगा। मूल्यनिष्ठ एवं दैवीय गुणों से युक्त जीवन ही आध्यात्मिकता का सार है। उन्होंने कहा कि आप किसी आध्यात्मिक लीडर से मिलते हैं तो अपने आप में कुछ परिवर्तन महसूस करते हैं। अक्सर यह

देखा गया है कि हम अपने से बेहतर व्यक्तित्व से मिलते हैं तो उनके गुणों के अपने जीवन में उतारने का प्रयास जरूर करते हैं। यदि जीवन में खुशी लाना चाहते हैं तो सुंदर और सकारात्मक विचारों को अपने स्वभाव में लाना होगा।

लीडर वही जो सिखाए
सम्मेलन में बीएसपी के सीईओ एस चंद्रसेकरन ने कहा कि लीडर वही है जो अपने सहकारियों को सिखाए। एक अच्छा लीडर, लीडर तैयार कर मैनेज कर सकता है, वह किसी भी संगठन को तैयार करने की हिम्मत रखता है। उन्होंने कहा कि लीडर एक ऐसा वायुमण्डल तैयार करता है, जिसमें सभी अपने आप को सुरक्षित महसूस करते हैं। लीडर को हमेशा यथातः को बढ़ावा देना चाहिए।

सम्मेलन में मैनेजमेंट ट्रेनर भारत भूषण ने कहा कि आंतरिक अवस्था पर ही बाहरी कारोबार निर्भर करता है। मन पर काबू नहीं होगा तो अच्छे लीडर नहीं बन सकते। उन्होंने कहा कि नकारात्मक व्यर्थ विचारों से मानसिक शक्ति बहुत कम होती है, इसलिए हमें ऐसे विचारों को छोड़ना चाहिए।

ईश्वर को विशेषताएं पसंद
इस अवसर पर मोहन सिंघल ने कहा कि ईश्वर को विशेषताएं पसंद हैं, जिसमें जितनी विशेषताएं होंगी वह उतना ही ईश्वर के समीप होगा। लोगों को आत्मा का ज्ञान नहीं है जो सबसे बड़ी विडंबना है। नेतृत्वकर्ता को हर परिस्थिति में एक समान रहना चाहिए अगर हमारा मन शांत रहेगा तो हम दूसरी परिस्थितियों को शांत

कर पाएंगे। भारतीय संस्कृति ने नारी को हमेशा आगे रखा है, जैसे लक्ष्मी-नारायण, राधे-कृष्ण, सीता-राम अगर हम इस ओर गंभीरता से सोचें तो सभी समस्याओं का हल मिल सकता है। उन्होंने कहा कि जहां फिजिक्स यखत्म होती है वहां मेटाफिजिक्स शुरू होता है। हमारे अंदर जो होगा वहीं हम दूसरों को दे सकते हैं। **ज्ञान के साथ नेतृत्व**
सम्मेलन में ब्रह्माकुमारी कमला बहन ने कहा कि सही नेतृत्व की विशेषता आध्यात्मिक से ही आ सकती है। ज्ञान के साथ नेतृत्व क्षमता का विकास संभव है। उन्होंने कहा कि आज का विषय प्रेरणादायी है, सही नेतृत्व क्षमता का विकास आध्यात्मिकता से ही हो सकता है। इस राष्ट्रीय सम्मेलन में इस्पात नगरी

आबू-अंबाजी दिव्य दर्शन मेंला का भव्य आयोजन

केशोद | इतिहास में पहली बार " आबू-अंबाजी दिव्य दर्शन मेंला " का भव्य आयोजन किया गया जिसमें माउण्ट आबू में ब्रह्माकुमारी विद्यालय में के चारो धाम की यात्रा का मोडल बनाया गया था। साथ में नक्की लेक आदि को दर्शाया गया। मानो की आबू अरावलीयों की वादियों के सुंदर रम्य स्थान यहाँ उतर आया हो। आठ दिवसीय मेले के दौरान रोज शाम आरती का अयोजन किया जाता रहा। हर रोज शहर के गणमान्य लोग सामूहिक आरती कर शांति में खड़े होकर शांति का दान विश्व को देते यह दृश्य देखते ही बनता था। जहाँ चारों ओर शोरगुल के मध्य असीम शांति का अनुभव मनभावन लगता था। इस आरती के समय शहर के लोग शांति की चाह में बहचदकर लोगो ने भाग

इतिहास में पहली बार



केशोद | आबू-अंबाजी दिव्य दर्शन मेंला का उद्घाटन के बाद प्रभु स्मृति में खड़े विधायक अरविंद लाडाणी, प्रसिद्ध उद्योगपति कुरजो धडुक, डेयुटी इंजीनियर करंगीया, डॉ. अणुडीया, प्रो. गजेरा, नगरपालिका प्रमुख गोकुल रादडीया, ब्र.कु. दमयंति दीदी, ब्र.कु. रूपाबेन तथा अन्य।

लिया। ऐसा आयोजन बार-बार करने को अनुरोध नगरजनों द्वारा किया गया। मेले में स्थानीय सेवाकेन्द्र को संचालिका ब्र.कु. रूपा ने आरती का आध्यात्मिक रहस्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज शांति की जरूरत हर मानवमात्र को है। उन्होंने कहा कि इस सृष्टि चक्र की बेला में स्वयं परमात्मा का अवतरण हुआ है। वह सबको मन इच्छित फल देने आया है। आप परमात्मा से संबंध जोड़ अपना भाग्य प्राप्त कर सकते हो। जिसे जीवन में हमेशा के लिए टेन्शन, अवशान्त जैसी मानसिक बीमारियों से निजात पाने का सुंदर समय चल रहा है। ब्र.कु. दमयंति बहन ने कहा कि यह शहर वालों के लिए बहुत ही सुंदर अवसर है जिसका लाभ उठाना चाहिए।

भारत - वार्षिक 170 रुपये
तीन वर्ष 510 रुपये
आजीवन 4000 रुपये
विदेश - 2000 रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेबल एट माउण्ट आबू) द्वारा भेजें।

ओम शान्ति मीडिया
सम्पादक : ब्र.कु. गंगाधर
ब्रह्माकुमारीज, शांतिवन, तलहटी
पोस्ट बॉक्स नं. - 5, आबू रोड (राज.) 307510
Enquiry For Membership, Mob. No. - 09414006096
(M)- 9414154344, E-mail : mediabkm@gmail.com,
omshantimedia@bkivv.org, website:www.omshantimedia.info

प्रति